नवांकुर विद्यापीठ, गंजबासौदा

क्रमशः

अंक 61

माह सितम्बर-2015

प्रति,

अन्दर के पृष्ठों पर

सार समाचार 1

✦ श्रद्धांजलि 3
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

✦ सम्पादकीय 4

✦ स्कूल-इन्फो 5
त्रिदिवसीय-शिक्षक-प्रशिक्षण-कार्याशाला

✦ हिन्दी-दिवस आयोजन..13

✦ रासेयो गतिविधि 14

✦ साहित्य सृजन 16

✦ शिक्षक की कलम 19

✦ अपना ज्ञान बढ़ाएँ 21

✦ बच्चों की कलम 22

✦ नन्ही कूची 28

विश्व-हिन्दी-दिवस

हिन्दी है
हम सबकी भाषा
आओ, इसका
मान बढ़ाएँ

सार समाचार

ईडन गार्डन में होगा वर्ल्ड कप का फायनल - अगले साल 11 मार्च से तीन अप्रैल तक भारत के

आठ शहरों में होने वाले आईसीसी ट्वेंटी-20 वर्ल्ड कप क्रिकेट का फायनल कोलकाता के ईडन गार्डन में खेला जायेगा। मैच बैंगलुरु, चैन्नई, धर्मशाला, मोहाली, मुम्बई, नागपुर, नई दिल्ली और कोलकाता में होंगे। भारत में पहली बार ट्वेंटी-20 का वर्ल्डकप खेला जा रहा है।

बिम्बलडन खिताब मेरे लिए सपना पूरा होने जैसा सानिया - शीर्ष वरीयता प्राप्त सानिया और

हिंगिस की जोड़ी ने दो घण्टे और 47 मिनिट तक चले बेहद रोमांचक और संघर्षपूर्ण खिताबी मुकाबले में दूसरी सीड रूस की एकाटेरिना मकारोवा और एलेना वेस्निना की जोड़ी को 5-7, 7-6, 7-5 से हराकर बिम्बलडन खिताब पर कब्जा जमा लिया। अपनी जोड़ीदार स्विट्जरलैण्ड की मार्टिना हिंगिस के साथ मिलकर वर्ष के तीसरे ग्रैण्ड स्लैम बिम्बलडन टेनिस टूर्नामेण्ट के महिला युगल खिताब जीतने वाली भारत का टेनिस स्टार सानिया मिर्जा ने कहा कि यह उनके लिए सपना पूरा होने जैसा है।

रतनगढ़-मन्दिर पहुँचा देश का सबसे वजनी घण्टा - देश का सबसे वजनी घण्टा दतिया जिले के प्रसिद्ध रतनगढ़ माता मन्दिर पर पहुंच गया है। वहीं मन्दिर में इसे लटकाने की तैयारियाँ चल रही हैं। शारदेय नवरात्र से पहले मन्दिर पर घण्टा लगाने का प्रयास प्रशासन कर रहा है। यह 1800 किलोग्राम का है। इसे ग्वालियर के प्रख्यात मूर्तिकार प्रभात राय ने तैयार किया है। इसकी ऊँचाई छह फीट तीन इंच है। जबकि सबसे ऊपर का व्यास एक फीट 9 इंच है, घण्टा टाँगने के लिए हुक की गोलाई एक फीट आठ इंच है। इस घण्टे में एक ओर त्रिशूल एवं दूसरी ओर नंदी के सींग दशाये गये हैं। इसमें 18 ओम और 18स्वास्तिक चिन्हित किये गए हैं। साथ ही, पूरे घण्टे में ऊपर से लेकर नीचे तक नौ रिंग लगाये गये हैं।

पहली बार महाकाल तक पहुँचा बाढ़ का पानी - 21 जुलाई, मंगलवार को तड़के जब महाकाल मन्दिर में भस्मारती के लिए गर्भगृह का दरवाजा

खोला गया, तो पुजारी चौंक पड़ा। गर्भगृह में चारों ओर पानी–ही–पानी भरा था और महाकाल जलमग्न थे। गुलाब की पँखुड़ियाँ पानी में तैर रही थीं। महाकाल की भस्मारती हमेशा ब्रह्ममुहूर्त में होती है। चूँकि आरती का समय भंग नहीं किया जा सकता, इसलिए पानी निकाले बिना ही आरती करने का फैसला लिया गया। करीब साढ़े चार हजार साल पुराने महाकाल मन्दिर में ऐसा पहली बार हुआ, जब बाढ़ के पानी में डूबे महाकाल की भस्मारती हुई।

ई-पंजीयन लागू करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य– ई–पंजीयन व्यवस्था लागू करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य है। प्रदेश में लागू की गयी सम्पत्ति की ई–पंजीयन व्यवस्था इस दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे लोगों को बिचौलियों और भ्रष्टाचार से मुक्ति मिलेगी। नयी व्यवस्था में प्रदेश के पंजीयन–कार्यालयों की मॉनीटरिंग भोपाल मुख्यालय से की जा सकेगी। हर सम्पत्ति की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध होगी।

मेजर ध्यानचन्द को ब्रिटेन में भारत–गौरव–सम्मान – हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद को 25 जुलाई को 'भारत–गौरव–सम्मान' दिया गया। उन्हें ब्रिटिश संसद में सम्मानित किया गया। इसके लिए उनके बेटे अशोककुमार को आमन्त्रित किया गया था।

रणवीर को स्वर्ण– 14 साल के रणवीरसिंह सैनी गोल्फ में गोल्ड मैडल जीतने वाले पहले भारतीय बन गये हैं। रणवीर ने लॉस एंजिल्स में स्पेशल ओलम्पिक्स में स्वर्ण–पदक जीता है।

चैन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स पर दो साल का प्रतिबन्ध – क्रिकेट को कलंकित करने वाली चैन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स टीमों को दो साल के लिए आईपीएल से बाहर कर दिया गया है। इनके प्रमखों गुरुनाथ मयप्पन और राज कुन्द्रा को जीवन–भर क्रिकेट से दूर रहने की सजा सुनायी गयी है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित लोढ़ा कमेटी ने आईपीएल की दागदार टीमों की सजा का ऐलान किया।

अमरनाथ श्रद्धालुओं पर हमला करने वाला आतंकी गिरफ्तार – पाकिस्तान का भेजा हुआ एक और आतंकी भारत ने जिन्दा पकड़ लिया है। उस्मान उर्फ कासिम खान नाम का ये आतंकी उस समय गिरफ्त में आ गया, जब यह और इसके साथी अमरनाथ यात्रियों पर हमले की फिराक में थे।

सबसे कम उम्र के सीए बने 19 साल के निश्चल– आन्ध्रप्रदेश के निश्चल नारायणन 19 साल की उम्र में देश के सबसे कम उम्र के चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट हैं। हालाँकि कानूनी अड़चनों की वजह से वे 21 साल के होने तक प्रोफेशनल सीए की प्रैक्टिस नहीं कर सकते। उन्होंने महज 13 साल की उम्र में 8वीं से 12 वीं तक की सभी परीक्षाएँ एक ही शैक्षणिक सत्र में उत्तीर्ण कर ली थीं।

नहीं रहे ''मिसाइल मैन'' – ''मिसाइल मैन'' के नाम से मशहूर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (83 वर्ष) का 27 जुलाई 2015, सोमवार को शाम 7.45 बजे शिलांग में दिल का दौरा पड़ने से निधान हो गया। उनके निधान पर सरकार ने सात दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया है, उन्होंने देश की रक्षा एवं अनुसन्धान संगठन यानि डी.आर.डी.ओ. तथा इसरो (भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संस्थान) में काम किया। आरम्भ में भारत के नागरिक– शान्ति–अन्तरिक्ष–कार्यक्रम में शामिल रहने के बाद सैन्य मिसाइल विकसित करने के कार्यक्रम में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1998 में किये गये दूसरे परमाणु–परीक्षण (पोखरण–2) और देश को मिसाइल तकनीक देने के लिए देश उन्हें सदैव याद करेगा। इसके बाद वे ''मिसाइल मैन'' कहलाने लगे।

संकलनकर्ता –**सुनील भावसार** (उ.श्रे.शिक्षक)

श्रद्धांजलि – हमारे कलाम

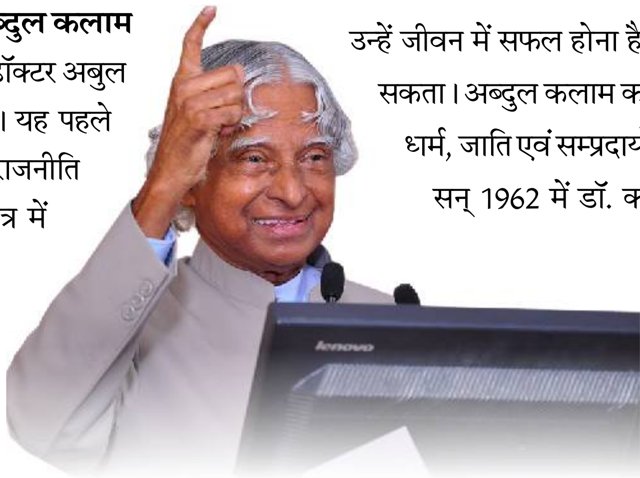

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का जीवन परिचय – उनका पूरा नाम डॉक्टर अबुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम है। यह पहले ऐसे गैर–राजनीतिज्ञ राष्ट्रपति रहे, जिनका राजनीति में आगमन विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में दिये गये उत्कृष्ट योगदान के कारण हुआ। कलाम सा. का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् में हुआ था। इनके पिता जैनुल्लाब्दीन एक कम पढ़े–लिखे और गरीब नाविक थे। वह नियमों के पक्के और उदार स्वभाव के इंसान थे। जो दिन में चार वक्त की नमाज भी पढ़ते थे। अब्दुल कलाम के पिता अपनी नाव मछुआरों को किराये पर देकर अपने घर का गुजारा चलाते थे। परिणामस्वरूप बालक अब्दुल कलाम को अपनी आरम्भिक शिक्षा पूरी करने के लिए घरों में अखबार वितरण का कार्य करना पड़ा। ए.पी.जे.अब्दुल कलाम एक बड़े और संयुक्त परिवार में रहे थे। उनके परिवार के सदस्यों की संख्या का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहिन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का विद्यार्थी जीवन बहुत कठिनाइयों भरा बीता। जब वह आठ–नौ वर्ष के रहे होंगे, तभी से उन्होंने अखबार–वितरण करने का कार्य शुरू कर दिया था। वह सुबह 4 बजे उठते और सबसे पहले गणित की ट्यूशन के लिए निकल पड़ते, वहाँ से आकर कुरान शरीफ का अध्ययन करते और फिर अखबार बाँटने निकल पड़ते। बचपन में उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि उनका लक्ष्य विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उन्नति करना ही है, जिसके लिए उन्होंने कॉलेज में भौतिक विज्ञान विषय को चुना। इसके बाद उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई सम्पन्न की।

उनकी प्रतिभा के स्तर को इस बात से समझा जा सकता है कि वह सीधे विज्ञान के क्षेत्र से राजनीति के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए थे। द्वीप जैसे छोटे से शहर रामेश्वरम मे पैदा हुए कलाम का प्रकृति से बहुत जुड़ाव रहा। इसके पीछे शायद यह कारण भी हो सकता है कि उनका गृहस्थान स्वयं एक प्राकृतिक एवं मनोहारी स्थान था। बचपन से उन्होंने अपनी पढ़ाई को बहुत अधिक महत्त्व दिया। वह जानते थे कि उन्हें जीवन में सफल होना है, तो पढ़ाई को अनदेखा नहीं किया जा सकता। अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व इतना उन्नत था कि वह सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदायों के व्यक्ति नजर आते हैं।

सन् 1962 में डॉ. कलाम भारतीय अन्तरिक्ष–अनुसन्धान–संगठन से जुड़ गये, इसके बाद से ही उन्होंने अपनी सफलता की कहानी गढ़नी शुरू कर दी। डॉ. कलाम को प्रोजेक्ट–डायरेक्टर के रूप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एस.एल.वी. तृतीय) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल है। डॉ. कलाम 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षामन्त्री के विज्ञान–सलाहकार तथा सुरक्षा–शोध और विकास विभाग के सचिव रहे। उन्होंने स्ट्रेटजिक मिसाइल सिस्टम का उपयोग आग्नेय शस्त्रों के रूप में किया। वह भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे। डॉ. कलाम को भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन.डी.ए. घटक दलों ने राष्ट्रपति के चुनाव के समय अपना उम्मीदवार बनाया था, जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने भी समर्थन किया था। 18 जुलाई, 2002 को डॉक्टर कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत द्वारा भारत का राष्ट्रपति चुना गया था।

डॉ. कलाम को विज्ञान के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत के नागरिक सम्मान के रूप में 1981 में पद्म–भूषण, 1990 में पद्म विभूषण, 1997 में 'भारत–रत्न' प्रदान किया गया।

डॉ. कलाम एक सामान्य परिवार से सम्बन्धित असामान्य शख्सियत के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने एरोनॉटिकल क्षेत्र में भारत को एक नयी ऊँचाई पर पहुँचाया। वे भारत के पहले ऐसे राष्ट्रपति हैं, जो अविवाहित होने के साथ–साथ वैज्ञानिक पृष्ठभूमि से राजनीति में आये। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन और डॉ. जाकिर हुसैन के बाद एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें 'भारत–रत्न' मिलने का सम्मान राष्ट्रपति बनने से पूर्व ही प्राप्त हो गया था।

उनका निधन दि. 27 जुलाई, 2015 को शाम 7.45 बजे शिलांग में एक कार्यक्रम के दौरान दिल का दौरा पड़ने से हो गया।

नवांकुर परिवार की ओर से श्रद्धांजलि।

सम्पादकीय

प्रिय विद्यार्थियो,

आप सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनाऐं! हिन्दी दिवस के अवसर पर क्रमशः का एक नवीन अंक आपके सामने प्रस्तुत है। खुशी का अवसर इसलिए भी है कि आज इस अंक के विमोचन के अवसर पर वे लोग भी हमारे साथ हैं, जो अपनी कलम से साहित्य का सृजन कर रहे हैं। हमारा क्रमशः के प्रकाशन का उद्देश्य भी यही है कि बच्चे साहित्य–सृजन की अभिरुचि विकसित कर सकें। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं, बल्कि हमारी अस्मिता है, हमारी पहचान है, हमारी सभ्यता है, हमारी संस्कृति है। इसलिए यदि हम अपनी भाषा से दूर हो रहे हैं, तो यकीन मानिये हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं और संस्कृति से दूर होना नैतिक पतन का कारण हो सकता है। हमारी भाषा हमें अपने आदर्शों से जोड़े रखती है, इसलिए आदर्शों से जोड़े रखने का कार्य न केवल शिक्षकों का है, बल्कि हमारे अभिभावकों का भी है। किसी साहित्यकार ने भी लिखा है कि –

''अंग्रेजी पढ़कर, जदपि सब गुन होत प्रवीण।
पर निज भाषा के ज्ञान के, रहन हीन के हीन।।''

इसलिए निश्चय ही सभी भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य हो सकता है, सगी माँ का दुलार, सगी माँ से ही मिलता है।

आज भी विश्व के 130 विश्वविद्यालयों में हिन्दी में भी पढ़ायी की जाती है। चीनी भाषा के बाद यह दूसरी ऐसी भाषा है, जिसे इतनी बड़ी संख्या में बोला जाता है। आज विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की विवशता है कि हिन्दी में प्रचार–प्रसार के अभाव में वे भारत में व्यापार कर पाने में असमर्थ होती हैं। कुल विज्ञापनों का 75 प्रतिशत हिन्दी में है। विभिन्न चैनल अंग्रेजी भाषा के साथ भारत में दाखिल तो हुए, पर हिन्दी की विशालता के आगे इन चैनलों ने अपने घुटने टेक दिये और इन चैनल्स को अपना हिन्दी–संस्करण लाना पड़ा। जुरासिक पार्क जैसी बेहद लोकप्रिय फिल्म हिन्दी में डब किये जाने के पश्चात् ही अपना सबसे बड़ा मुनाफा कमा पायी। विदेशों में लगभग 25 से अधिक पत्र–पत्रिकाएँ नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। हिन्दी एक शाश्वत व समृद्ध भाषा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर व गांधीजी के अनुसार हिन्दी जनमानस की भाषा है, इसलिए आईये, हिन्दी की जय–जयकार को अधिकाधिक हिन्दी भाषा का प्रयोग करें और गर्व से कहें कि ''हिन्दी है हम वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा।''

आपका

सन्दीप रावत

सम्पादक

आओ शिक्षक दिवस मनायें

आओ शिक्षक–दिवस मनायें
अपने गुरुजनों को रोली–तिलक लगायें।
पुष्पहार और शाल–श्रीफल देकर,
उनका मान बढ़ायें।
आओ शिक्षक–दिवस मनायें
गुरूओं का उपकार है हम पर,
शिक्षित कर संस्कार दिये।
जाति–धर्म का भेद मिटाया,
पढ़ना–लिखना हमें सिखाया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

पढ़–लिखकर हम योग्य बनेंगे।
गुरुओं का हम नाम करेंगे।
आओ शिक्षक दिवस मनायें–2
गुरुजन भी हैं कितने दयालु,
गुरु–दक्षिणा कभी न माँगें।
वो तो केवल सम्मान चाहते,
उनका मान बढ़ायें।
कृपापात्र बन जायें हम भी,
उनको शीश झुकाकर,
सारे जग में नाम करें हम, ज्ञान का अलख जगाकर।
गुरुओं का सम्मान करें, हम शिक्षक–दिवस मनाकर,
आओ शिक्षक–दिवस मनायें।
आओ शिक्षक–दिवस मनायें।

– कु. शिखा प्रजापति

कक्षा–11 वीं गणित

स्कूल इन्फो

नवांकुर में त्रिदिवसीय शिक्षक-प्रशिक्षण-कार्यशाला का आयोजन

म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल एवं व्ही.एल.एस.एस.एस. रायसेन द्वारा नवांकुर विद्यापीठ में खगोलीय मॉडल कार्यशाला का त्रिदिवसीय आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें नगर के मॉडल पब्लिक स्कूल, सैण्ट एस.आर.एस. स्कूल, स्पन्दन अकादमी, डॉल्फिन स्कूल, राजीव मैमोरियल, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, विश्वम्भरा पब्लिक स्कूल मण्डी बामोरा आदि के 70 शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ समाजसेवी कान्तीभाई शाह एवं विहिप प्रान्तीय मन्त्री श्री राजेश तिवारी एवं प्राचार्य श्री रूपेश लाड़ (स्कूल ऑफ एक्सीलेंस) की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सभी अतिथियों ने शिक्षकों के महत्त्व एवं कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम को स्रोत व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी (नवनिर्मित मुम्बई) एवं कार्यक्रम-समन्वयक श्री दीपक सोनी ने भी सम्बोधित किया।

इस कार्यशाला में शिक्षकों को सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, मौसम-चक्र, शुक्र-पारगमन, रोटेशन मॉडल, पृथ्वी की सूर्य के सापेक्ष गति, यरेनस, गति, चन्द्रकला, टेलीस्कोप निर्माण, यूरेनस पर वायुमण्डल, सूर्योदय एवं सूर्यास्त से सम्बन्धित अनेक मॉडल्स का अवलोकन कराया गया। साथ ही, नैनो दूरी के माध्यम से सभी ग्रहों व सूर्य के नैनो आकार के प्रत्यक्ष दर्शन कराये गये। शिक्षकों को विज्ञान के मॉडल स्वयं तैयार करने की विधियाँ भी सिखलायी गयी।

श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी व श्री दीपक सोनी ने शिक्षा को अधिक-से-अधिक रोचक एवं दिलचस्प बनाने के कई अहम एवं रोचक उपाय सुझाये।

कार्यशाला के अन्तिम दिन प्रो. एस. के. गुप्ता, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, श्री डी.एस.राय (सेवानिवृत्त वरिष्ठ आई.ए.एस. एवं पूर्व डी.पी.आई., विज्ञान-शिक्षा) ने शिक्षा में नवाचार विषय पर अपना उद्बोधन दिया। प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित ने सभी उपस्थित अतिथियों व शिक्षकों का आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में हाईस्कूल, हायर सेकण्डरी परीक्षाओं में प्रावीण्य सूची में अपना नाम दर्ज कराने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र व स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। साथ ही, स्काउट में राज्यपाल-पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र व स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय परिवार की ओर से सभी उपस्थित अतिथियों को स्मृति-चिह्न भेंट किये गये एवं स्रोत-व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी एवं कार्यशाला-

समन्वयक श्री दीपक सोनी का शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। इस प्रकार, ग्रुप–फोटोग्राफ के पश्चात् कार्यशाला का भव्यतापूर्वक समापन हुआ।

नवांकुर में हुआ स्वच्छ भारत अभियान प्रश्नमंच

नगरपालिका परिषद्, गंजबासौदा की ओर से 'स्वच्छ भारत मिशन प्रश्नमंच प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन–समारोह में मुख्य–अतिथि के रूप में नगरपालिका–

अध्यक्ष श्रीमती मधुलिका अग्रवाल, मुख्य अतिथि के रूप में श्री शैलेन्द्र दीक्षित, प्राचार्य, नवांकुर विद्यापीठ एवं विशेष अतिथि के रूप में मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री सुधीर उपाध्याय, न.पा. स्वास्थ्य–अधिकारी श्री आर.के.नेमा, भाजपा ग्रामीण महिला मोर्चा की अध्यक्ष श्रीमती गायत्री रघुवंशी एवं पार्षद श्री कपिल शर्मा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती पूजन से हुआ, तत्पश्चात् नवांकुर की छात्राओं द्वारा सरस्वती–वन्दना एवं मध्यप्रदेश–गान प्रस्तुत किया गया। नवांकुर के संगीत विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा राग केदार का प्रस्तुतीकरण किया गया। वरिष्ठ आचार्य श्री शैलेन्द्र पिंगले, प्रधानाध्यापिका सुश्री अरुणा शर्मा, आचार्य श्री केशव लाहौरी, श्री सन्दीपनारायण जेतली, श्री अविनाश डोंगरे, श्री विजय शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

तत्पश्चात् श्री धर्मेन्द्र जैन एवं श्री डेजी शर्मा द्वारा प्रश्नमंच कार्यक्रम का शानदार आयोजन हुआ, रोचक प्रश्नों का समावेश होने से पूरा कार्यक्रम बड़े ही आनन्द एवं रोमांच से भरा रहा। इस कार्यक्रम में निर्णायक मण्डल के रूप में श्री शैलेन्द्र पिंगले, श्री शम्भूसिंह रघुवंशी, श्री सन्दीप रावत उपस्थित रहे। दो दिवसीय प्रश्नमंच में प्राथमिक विभाग से डॉल्फिन स्कूल ने प्रथम एवं नवांकुर विद्यापीठ ने

द्वितीय स्थान प्राप्त किया। माध्यमिक विभाग से भारत माता कॉन्वेंट स्कूल ने प्रथम एवं डॉल्फिन स्कूल ने द्वितीय एवं नवांकुर विद्यालय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हाईस्कूल/ हायर सेकेण्डरी विभाग की प्रश्नमंच प्रतियोगिता में भारत माता कॉन्वेंट के छात्रों ने प्रथम तथा नवांकुर विद्यापीठ के छात्र–छात्राओं ने द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालयीन–स्तर पर जवाहरलाल नेहरु कृषि महाविद्यालय के छात्रों ने प्रथम, लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय की टीम ने द्वितीय एवं जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय के छात्रों ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर नवांकुर विद्यालय परिवार की ओर से नगरपालिका अध्यक्ष को स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

कार्यक्रम का समापन–समारोह नगरपालिका के भवन में आयोजित किया गया, जिसमें सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं नकद राशि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर नगरपालिका स्वास्थ्य–अधिकारी, पार्षद श्री राजू दाँगी, श्री नरेश रिछारिया एवं अन्य अभिभावकगण तथा पत्रकार उपस्थित थे। नवांकुर विद्यालय द्वारा अहम भूमिका निभाने पर

अतिथियों द्वारा विद्यालय को प्रमाण–पत्र एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं समन्वयन श्री धर्मेन्द्र जैन एवं श्री डेजी शर्मा द्वारा किया गया।

स्वतन्त्रता दिवस पर नवांकुर में मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया गया

नवांकुर विद्यापीठ में स्वतन्त्रता–दिवस की 69 वीं वर्षगाँठ धूमधाम से मनायी गयी। इस अवसर पर विद्यालय में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रारम्भ में प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित द्वारा ध्वजारोहण किया गया। राष्ट्रगान के पश्चात् मध्यप्रदेश–गान का सामूहिक रूप से गायन किया गया, तत्पश्चात् छात्र/छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिनकी उपस्थित दर्शकों द्वारा बड़ी सराहना की गयी। जब नवांकुर की छात्राओं द्वारा राजस्थानी नृत्य घूमर को प्रस्तुत किया गया तो प्रांगण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

इस अवसर पर कक्षा–10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर

कु. मनीषा शर्मा तथा कु. साक्षी राय (93.8 प्रतिशत अंक) तथा कक्षा–8 में कु. आस्था दुबे द्वारा (98.7 प्रतिशत अंक) प्राप्त करने पर श्रद्धा–पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि यह पुरस्कार विद्यालय के अध्यक्ष डॉ. विजय शिरढोणकर की पुत्री श्रीमती श्रद्धा टिल्लू द्वारा कक्षा–8 और 10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को प्रदान किया जाता है। इसी प्रकार विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती रेणु श्रीवास्तव द्वारा कु. साक्षी राय तथा कु. मनीषा शर्मा को कक्षा–10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एक हजार एक सौ रुपये का ''शिरोमणी पुरस्कार'' प्रदान किया। यह पुरस्कार उनकी सासू माँ की स्मृति में प्रदान किया गया।

नवांकुर स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस के डी.सी.ए. के छात्र राहुल साहू प्रथम, कु. साक्षी विश्वकर्मा द्वितीय, कु. सविता मीणा तृतीय तथा पी.जी.डी.सी.ए. के छात्र कु वन्दना राजपूत प्रथम, जूली जैन द्वितीय तथा प्रगति कुलश्रेष्ठ तृतीय को शील्ड एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार निबन्ध लेखन में कु. सुरभि जैन प्रथम, शिवम शर्मा द्वितीय, बसन्त व्यास

और कु. प्रियंका नरवरिया द्वारा तृतीय स्थान प्राप्त करने पर शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण आयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों तथा रासेयो प्रभारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्काउट–दल ने बैण्ड धुन द्वारा प्रतिभागी छात्रों का उत्साहवर्द्धन किया। विद्यालय के शिक्षक श्री सन्दीप रावत ने कार्यक्रम का संचालन किया। अन्त में, मिष्ठान वितरण के पश्चात् कार्यक्रम का समापन किया गया।

नवांकुर के 21 छात्र प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन–योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत

मध्यप्रदेश–शासन की प्रतिभाशाली छात्र–प्रोत्साहन–योजना के अन्तर्गत नवांकुर विद्यापीठ के 21 छात्र–छात्राओं को भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री शिवराजसिंह चौहान द्वारा 25–25 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया, जो जिले में सर्वाधिक है।

सम्मानित होने वाले छात्र–छात्राओं के नाम इस प्रकार हैं – कामेश गौड़ पुत्र श्री महेन्द्र कुमार, गौरवसिंह रघुवंशी पुत्र श्री मनीषकुमार रघुवंशी, योगेन्द्रसिंह राजपूत पुत्र श्री मलखानसिंह राजपूत, बसन्त कुमार पुत्र श्री गोविन्दसिंह पटेल, शुभम आचवल पुत्र स्व. श्री सन्तोषराव आचवल, कु. कीर्ति अहिरवार पुत्री श्री टीकाराम अहिरवार, राहुल विश्वकर्मा पुत्र श्री जगदीशप्रसाद विश्वकर्मा, शिवओम रघुवंशी पुत्र श्री ओमकारसिंह रघुवंशी, कु. दीपा चौरसिया पुत्री श्री नरेन्द्र प्रसाद, शुभम शर्मा पुत्र श्री ब्रजेशकुमार शर्मा, कु. गीतिका कुशवाह पुत्री श्री रामरतन कुशवाह, हेमन्त यादव पुत्र श्री लखनलाल यादव, सृजल जैन पुत्र श्री सुनीलकुमार जैन, अक्षय ठाकुर पुत्र

श्री रणधीरसिंह ठाकुर, निखिल जैन पुत्र श्री नरेन्द्र जैन, शुभम पटवा पुत्र श्री अशोककुमार पटवा, कु. अंजली ठाकुर पुत्री श्री वीरेन्द्रसिंह ठाकुर, प्रमोद रघुवंशी पुत्र श्री महाराजसिंह रघुवंशी, कु. राशि श्रीवास्तव पुत्री श्री दिनेश श्रीवास्तव, कु. रजनी साहू पुत्री श्री धीरजसिंह साहू, दीपेश रघुवंशी पुत्र श्री बृजेन्द्रसिंह रघुवंशी, नितिन राठौर पुत्र श्री चरणसिंह राठौर।

उपर्युक्त 21 विद्यार्थियों ने माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा आयोजित हायर सेकेण्डरी 2015 की परीक्षा में 85 प्रतिशत अंक प्राप्त करके 25–25 हजार रुपये के पुरस्कार की पात्रता प्राप्त की है।

प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री शिवराजसिंह चौहान की घोषणानुसार हायर सेकण्डरी की परीक्षा में नियमित विद्यार्थी के रूप में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को लैपटॉप क्रय करने के लिए शासन द्वारा 25–25 हजार की प्रोत्साहन–राशि पुरस्कार के रूप में प्रदान की गयी। विगत वर्ष भी नवांकुर के 18 छात्रों को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

उपर्युक्त पुरस्कार वितरण समारोह भोपाल के लाल परेड ग्राउण्ड में आयोजित हुआ, जिसमें मुख्यमन्त्री महोदय ने सभी मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए सम्बोधित किया।

नवांकुर–परिवार ने विकासखण्ड के सभी पात्र छात्र–छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

नवांकुर के छात्र कामेश गौड़ जिले की प्रावीण्य-सूची में द्वितीय स्थान पर

मा.शि.म. मध्यप्रदेश, भोपाल द्वारा आयोजित हायर सेकण्डरी–2015 की परीक्षा में नवांकुर विद्यापीठ के छात्र–छात्राओं ने उत्कृष्ट अंक प्राप्त करके विद्यालय को गौरवान्वित किया। गणित–संकाय के छात्र कामेश गौड़ पुत्र श्री महेन्द्रकुमार गौड़ ने कुल 500 अंकों में से 469 अंक, 93.8 प्रतिशत अंक प्राप्त करके जिले की प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कामेश ने विषयवार हिन्दी में 92, अंग्रेजी में 94, गणित में 91, भौतिकशास्त्र में 97, रसायनशास्त्र में 95 अंक प्राप्त करके सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की।

गणित संकाय में विद्यालय के कुल 154 विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जिनमें 109 प्रथम श्रेणी में तथा 31 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस संकाय के कामेश गौड़ पुत्र श्री महेन्द्र कुमार गौड़ प्रथम, गौरवसिंह रघुवंशी पुत्र श्री मनीषकुमार–92.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय, योगेन्द्रसिंह पुत्र श्री मलखानसिंह–91.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान पर रहे।

वाणिज्य–संकाय में विद्यालय के 66 विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जिनमें 50 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में तथा 14 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस संकाय की कु. दीपा चौरसिया पुत्री श्री नरेन्द्रप्रसाद–90 प्रतिशत–प्रथम, कु. गीतिका कुशवाह पुत्री श्री रामरतन कुशवाह–88.4 प्रतिशत द्वितीय, दीपेश रघुवंशी पुत्र श्री ब्रजेन्द्रसिंह–85.4 प्रतिशत तृतीय स्थान पर रहे।

जीव–विज्ञान–संकाय में विद्यालय के कुल 38 विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जिनमें 21 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में तथा 12 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी में उत्त्तीर्ण हुए। इस संकाय की कु. सृष्टि रघुवंशी–82.6 प्रतिशत प्रथम, कु. मोना अहिरवार पुत्री श्री खिलानसिंह–82 प्रतिशत द्वितीय, कु. भारती शर्मा पुत्री श्री बद्रीप्रसाद शर्मा–80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान पर रहीं। उल्लेखनीय है कि विद्यालय के कुल 180 छात्र–छात्राएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए तथा 10 छात्रों ने 90 प्रतिशत से भी अधिक अंक प्राप्त किये।

नवांकुर संगीत–विद्यालय में संगीत–परीक्षा–संपन्न

विगत दिवस दिनांक 29.5.15 को नवांकुर संगीत विद्यालय में क्रियात्मक परीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें नवांकुर संगीत विद्यालय के 110 छात्र/छात्राओं ने अपनी–अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उक्त परीक्षा ठाकुर उदयप्रतापसिंह, ललितकला संगीत महाविद्यालय, भोपाल द्वारा सम्पन्न करायी गयी।

प्रथम वर्ष के छात्रों ने राग यमन, भूपाली, विहाग, खमाज एवं भैरव की सुन्दर बन्दिशें (छोटे ख्याल में) प्रस्तुत कीं। द्वितीय वर्ष के छात्रों ने राग आसावरी में बड़ा ख्याल, राग वृन्दावनी सारंग में ध्रुपद एवं भैरवी, भीमपलासी, दुर्गा एवं देस में छोटे ख्याल की प्रस्तुति दी, जो आकर्षक थी। तान एवं आलाप में आनन्द बरसा दिया। तृतीय वर्ष के छात्रों ने राग मालकोस एवं केदार में बड़ा व छोटा ख्याल एवं तराना के साथ राग हमीर, जौनपुरी, पीलू एवं कालिंगड़ा में छोटा ख्याल तान व आलाप सहित सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। चतुर्थ, पंचम एवं प्रभाकर के छात्रों द्वारा राग जय–जयवन्ती, दैसकार में बड़ा ख्याल ध्रुपद एवं धमार, राग दरबारी में बड़ा ख्याल, ध्रुपद तथा राग जयजयवन्ती में धमार एवं अन्य रागों में छोटा ख्याल, ठुमरी, गजल, भजन एवं गीतों का सुन्दर एवं आकर्षक प्रस्तुतिकरण किया। तबला–वादन में प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष के छात्रों ने तीन ताल, झप ताल एवं एक ताल में पेशकारा, परण एवं टुकड़े के साथ कायदा एवं पलटे की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दीं। चतुर्थ, पंचम एंव प्रभाकर के छात्रों ने झप ताल, एकताल, चौताल, दीपचन्दी, आड़ा चौताल में परण, पेशकारा, टुकड़े के साथ कायदा एवं पलटे की शानदार, सफाई के साथ तबला–वादन किया। उल्लेखनीय है कि विगत बारह वर्षों से नवांकुर–संगीत–विद्यालय नगर में संचालित है, जिसमें न केवल नवांकुर के विद्यार्थी, अपितु अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के विद्यार्थी भी संगीत–शिक्षा–ग्रहण कर रहे हैं। प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में प्रातः 8 से 11 बजे तक एवं अन्य दिनों में सायं 5 से 7 बजे तक संगीत की विशेष कक्षाएँ लगायी जाती हैं।

इस दौरान संगीत–विद्यालय के आचार्यगण रामकिशन राठौर, मुकेश शर्मा, कु. वन्दना भार्गव एवं शैलेन्द्रकुमार पिंगले, छात्र शिवासिंह राजपूत और चेतनसिंह राजपूत ने अपना सहयोग प्रदान किया।

नवांकुर में छात्रों तथा शिक्षकों ने सीखे विविध प्रकार के योग-आसन

दिनांक 21.6.15 को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग–दिवस के अवसर पर नवांकुर विद्यापीठ में योगाभ्यास–कक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें नवांकुर विद्यापीठ के कक्षा 6 से 12 तथा डॉल्फिन के कक्षा 6 से 10 तक के 750 छात्र/छात्राओं सहित 150 शिक्षक–शिक्षिकाओं ने विद्यालय प्रांगण में उत्साहपूर्वक योगाभ्यास में भाग लिया।

इस अवसर पर विद्यालय के व्यायाम शिक्षक श्री विजय शर्मा द्वारा अनुलोम–विलोम, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, भ्रामरी प्राणायाम सहित अनेक प्रकार के व्यायाम तथा ध्यान–योगासनों को लगाने का अभ्यास कराया गया। राज्य–स्तर पर चयनितत योग के छात्र–छात्राओं द्वारा इस दौरान योगाभ्यासियों का निर्देशन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' तथा मध्यप्रदेश गान एवं समापन के अवसर पर राष्ट्रगान का गायन किया गया।

विद्यालय के शिक्षक सन्दीप रावत ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए योग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उल्लेखनीय है कि विद्यालय प्रांगण में प्रतिदिन 5.30 बजे से योग–कक्षा का संचालन किया जाता है, जिसमें विद्यालय के व्यायाम–शिक्षक विजय शर्मा द्वारा छात्र–छात्राओं को विभिन्न प्रकार के योगासनों व खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

सम्पादक मण्डल :

- **शैलेन्द्रकुमार पिंगले**, सम्पादन एवं परामर्श
- **सन्दीप रावत**, प्रधान सम्पादक
- **सुनील भावसार**, समाचार सम्पादक
- **श्रीमती रश्मि प्रकाश**, सह सम्पादक

नवांकुर के दो व डॉल्फिन के छः स्काउट्स स्काउट्स प्रशिक्षण शिविर हेतु चयनित

राष्ट्रपति स्काउट प्रशिक्षण–शिविर हेतु नवांकुर के दो और डॉल्फिन के छः स्काउट्स का चयन किया गया है। इस शिविर हेतु चयनित किये गये म.प्र. के कुल 64 स्काउट्स में से विदिशा जिले के कुल 8 स्काउट्स शामिल हैं, जो नवांकुर और डॉल्फिन स्कूल के हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं – रामकृष्ण राठौर पुत्र श्री दीवानसिंह कक्षा–10, सन्दीप दाँगी पुत्र श्री बलराम दाँगी कक्षा–10, नितिन रिछारिया पुत्र श्री अनिल रिछारिया कक्षा–10, अक्षत शर्मा पुत्र श्री रमेश शर्मा कक्षा–10, सोमिल जैन पुत्र श्री मनोज जैन कक्षा–10, अक्षय तिवारी पुत्र श्री मनोज तिवारी कक्षा–10, ऋषि समैया पुत्र श्री जितेन्द्र समैया कक्षा–10, अमन साहू पुत्र श्री राजू साहू कक्षा–10।

उपर्युक्त आठों स्काउट्स 17 से 21 अगस्त तक राज्य–प्रशिक्षण–केन्द्र, गाँधी नगर, भोपाल में प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित हुए। ये स्काउट्स राष्ट्रपति जाँच–शिविर में सफल होने पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किये जायेंगे। इन स्काउट्स की सफलता में विद्यालय के स्काउट–प्रभारी श्री रामबाबू पांचाल एवं आशीष मिश्रा का योगदान सराहनीय रहा है।

10 वर्ष की आयु पूरी कर चुका कोई छात्र स्काउट्स में प्रवेश ले सकता है, जिसे पहले तीन माह का दीक्षा–पाठ्यक्रम, छः माह का प्रथम सोपान, नौ माह का द्वितीय सोपान, नौ माह का तृतीय सोपान और नौ माह का राज्यपाल पुरस्कार तथा बारह माह बाद राष्ट्रपति पुरस्कार पाठ्यक्रम पूर्ण करना पड़ता है।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए नवांकुर व डॉल्फिन के 9 छात्रों का चयन

सीहोर में दिनांक 1.8.15 से 2.8.15 तक सम्भाग–स्तरीय योग–प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नवांकुर व डॉल्फिन स्कूल के आठ छात्र/छात्राओं ने भाग लिया, जिनमें से उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर छः छात्राओं का राज्यस्तरीय योग–प्रतियोगिता के लिए किया गया, जिनके नाम इस प्रकार हैं – कु. शीतल रघुवंशी कक्षा–12, सौरभ राठौर कक्षा–12, नीतेश साहू कक्षा–12, विकास कुमार दुबे, कक्षा–10, विशाल रघुवंशी कक्षा–10 तथा यश राजभर कक्षा–8।

राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन दि. 23.8.15 से 28.8.15 तक सीहोर में किया गया। इस टीम का नेतृत्व विद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी श्री विजय शर्मा ने किया। गंजबासौदा के सैण्ट एस.आर.एस. पब्लिक स्कूल में दिनांक 17 से 19.8.15 तक सम्भाग–स्तरीय शतरंज–प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नवांकुर व डॉल्फिन के 14 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया, जिनमें से उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर तीन छात्र–छात्राओं का चयन राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता के लिए किया गया, जिनके नाम इस प्रकार हैं–कु. श्रेया शिरढोणकर कक्षा–9, कु. दीक्षा दांगी कक्षा–10, अंकुश नायक कक्षा–7।

राज्य–स्तरीय शतरंज–प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 7.9.15 से 10.9.15 तक खण्डवा में किया जायेगा।

नवांकुर व डॉल्फिन के 6 छात्र राज्यपाल-स्काउट टैस्टिंग कैम्प में सम्मिलित

17 अगस्त से 21 अगस्त 2015 तक राज्य प्रशिक्षण केन्द्र, गाँधीनगर, भोपाल में राज्यपाल स्काउट टैस्टिंग कैम्प सम्पन्न हुआ। इस शिविर में म.प्र. के विभिन्न सम्भागों से 120 स्काउट सम्मिलित हुए, इस शिविर में नवांकुर के एक व डॉल्फिन के पांच स्काउट्स ने हिस्सा लिया। इन विद्यार्थियों में नवांकुर के यश राजपूत कक्षा–10, व डॉल्फिन के अमन रघुवंशी कक्षा–10, सत्यम रघुवंशी कक्षा–9, मोहित रघुवंशी कक्षा–9, यश दुबे कक्षा–9, सोम शाह कक्षा–9 के नाम शामिल हैं। इस शिविर में सफल होने वाले स्काउट्स को महामहिम राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया जायेगा।

तृतीय सोपान जाँच शिविर में नवांकुर व डॉल्फिन के छः–छः स्काउट सम्मिलित

स्काउट का तृतीय सोपान का जाँच शिविर दिनांक 17 अगस्त से 21 अगस्त 2015 तक क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, खरबई, जिला रायसेन में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में नवांकुर व डॉल्फिन के छः–छः विद्यार्थियों ने अपनी भागीदारी की। नवांकुर के तरुण रघुवंशी कक्षा–9, अमित बघेल कक्षा–9, आदित्य दाँगी कक्षा–9, रोहन कुशवाह कक्षा–8, विशाल कुशवाह कक्षा–9 व लोकेश दिनकर कक्षा–9 शामिल हैं। वहीं डॉल्फिन के ऐश्वर्य डोंगरे कक्षा–9, सत्यम रघुवंशी कक्षा–9, आयुष यादव कक्षा–10, पीयूष बघेल कक्षा–9, गगन लोधी कक्षा–9, अभय तिवारी कक्षा–9 के नाम सम्मिलित हैं। यदि ये सभी विद्यार्थी इस शिविर में सफल होते हैं तो ये अगले वर्ष के राज्यपाल जाँच शिविर में सम्मिलित हो सकेंगे।

नवांकुर में मेहँदी प्रतियोगिता आयोजित

दिनांक 28.8.15 को रक्षाबन्धन के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय–सेवा–योजना नवांकुर इकाई के तत्त्वावधान में नवांकुर विद्यालय में एक मेहँदी–प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा–9 से 12 तक की लगभग 100 छात्राओं तथा पाँच छात्रों ने भी भाग लिया।

प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में विद्यालय की अध्यापिका सुश्री समीक्षा जैन, सुश्री वर्षा गोस्वामी तथा श्रीमती रेणु श्रीवास्तव उपस्थित थीं।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित, विशेष अतिथि विजय शर्मा एवं सन्दीप रावत उपस्थित थे। विद्यालय के रासेयो प्रभारी शम्भूसिंह रघुवंशी तथा रासेयो बालिका इकाई प्रभारी सुश्री वन्दना भार्गव ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र–छात्राओं ने तरह–तरह के डिजाइनों/आकारों में मेहँदी लगाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया।

द्वारा– **सुनील भावसार (समाचार सम्पादक)**

शिक्षक दिवस पर स्थानीय विधायक जी ने किया शिक्षकों एवं छात्रों को सम्मानित

स्थानीय विधायक द्वारा नवांकुर के शिक्षक सम्मानित

शिक्षक दिवस के अवसर पर स्थानीय विधायक श्री निशंक कुमार जैन द्वारा मानस भवन में सम्मान-समारोह - 2015 का आयोजन किया गया। इस समारोह में विधायक महोदय द्वारा बासौदा नगर एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लगभग 1000 शिक्षकों को फाईल, प्रशस्ति पत्र एवं श्रीफल की भेंट देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान नवांकुर विद्यापीठ के शिक्षकगण श्री संदीप नारायण जेतली, श्री रामकिशन राठौर, श्री सुनील भावसार, श्री रामनारायण नरवरिया, श्री अनिल रिछारिया, श्री अनिल चतुर्वेदी, श्री मुकेश जैन, श्री जवाहरलाल कोरी, श्रीमती वन्दना व्यास, श्रीमती अनीता गोप, श्रीमती राजकुमारी जैन, श्रीमती नीलम जैन, श्रीमती सुनीता सैनी को सम्मानित किया गया।

नवांकुर में हिन्दी दिवस पर क्रमशः का विमोचन एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन

गंजबासौदा : राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्त्वाधान में नवांकुर विद्यापीठ के नवीन परिसर में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया एवं विद्यालय की पत्रिका क्रमशः के हिन्दी दिवस विशेषांक का विमोचन किया गया। साथ ही नगर के वरिष्ठ साहित्यकार श्री चन्द्रकुमार तारण एवं युवा साहित्यकार श्री आशीष दुबे को शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम दो चरणों में सम्पन्न हुआ। पहले चरण में नवांकुर की पत्रिका क्रमशः के हिन्दी दिवस विशेषांक का विमोचन किया एवं संस्था के छात्र कवियों द्वारा अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया गया। द्वितीय चरण में नगर के जाने-माने साहित्यकारों द्वारा कविता पाठ किया गया। इस अवसर पर 'हिन्दी की महत्ता और उसकी दुर्दशा' पर विचार विमर्श किया गया। कार्यक्रम में रासेयो के कार्यक्रम अधिकारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया जबकि आभार रासेयो कार्यक्रम अधिकारी (बालिका इकाई) सुश्री वन्दना भार्गव द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य महोदय ने छात्रों को एक अच्छे नागरिक बनने एवं देशहित में कार्य करने की सीख दी। कार्यक्रम का संचालन रासेयो की स्वयंसेवक कु. प्रिया शर्मा, कु. कृतिका चौधरी एवं श्री सन्दीप रावत द्वारा किया गया।

रासेयो का उन्मुखीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

नवांकुर विद्यापीठ की राष्ट्रीय सेवा योजना–इकाई का छात्र–उन्मुखीकरण कार्यक्रम बड़े ही उत्साह एवं प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यालय के लगभग 180 स्वयंसेवकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रेरणा–पुरुष श्री विवेकानन्द जी के चित्र के समक्ष दीप–प्रज्वलन एवं माल्यार्पण से हुआ। इस अवसर पर दीक्षा राजपूत ग्रुप द्वारा सरस्वती–वन्दना का गायन किया गया। कु. प्रिया शर्मा एवं कु. कृतिका चौधरी द्वारा अतिथियों का रोली–अक्षत द्वारा स्वागत किया गया। रासेयो प्रभारी–शम्भूसिंह रघुवंशी ने रासेयो के मूल उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और रासेयो के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री अरुणा शर्मा, विशेष अतिथि के रूप में विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित, डॉल्फिन के प्राचार्य श्री रमेश शर्मा, श्री केशव लाहौरी, श्री रामकिशन राठौर तथा रासेयो में नवनियुक्त बालिका इकाई–प्रभारी सुश्री वन्दना भार्गव उपस्थित थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व रासेयो बालिका इकाई–प्रभारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में रासेयो गीत ''जय–जगत–जय जगत'' तथा समापन के अवसर पर ''हम होंगे कामयाब'' गीत का गायन किया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्रकुमार दीक्षित ने स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए रासेयो की उपलब्धियों को बताकर कहा कि समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने रासेयो के उद्देश्यों से भी स्वयं सेवकों को परिचित कराया। स्वयंसेविका कृतिका चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

रासेयो द्वारा स्वच्छता रैली आयोजित

नगरपालिका परिषद्, गंजबासौदा द्वारा नगर में स्वच्छता अभियान पर आधारित एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। जिसमें नवांकुर के रासेयो के छात्र–छात्राओं ने भी बढ़–चढ़कर भागीदारी की। तख्तियों एवं बैनर के माध्यम से सभी स्वयंसेवकों ने नगर को स्वच्छ रखने के लिए प्रचार–प्रसार किया।

राष्ट्रीय सेवा–योजना द्वारा शिक्षक दिवस पर आयोजन

शिक्षक दिवस के अवसर पर नवांकुर की रासेयो इकाई के माध्यम से शिक्षक–सम्मान–कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों का अक्षत रोली व उपहार देकर सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में रासेयो के बालक–बालिकाओं ने मधुर गीता का गान किया। छात्र उमंग भार्गव ने गीत ''आशाएँ'' प्रस्तुत किया तो दूसरी ओर एन.एस.एस. बालिका इकाई की छात्राओं ने भाँगड़ा नृत्य की प्रस्तुति दी। रासेयो बालक–वर्ग के स्वयंसेवकों ने स्वच्छता अभियान पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर प्राचार्य महोदय ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए समाज के लिए अपने दायित्वों का निर्वहन करने की बात रखी तथा एक सच्चे नागरिक बनने का सन्देश दिया। इस अवसर पर श्री रमेश शर्मा, श्री पहलवानसिंह राजपूत, श्रीमती रेणु श्रीवास्तव एवं श्री सन्दीप रावत ने बच्चों को प्रेरक सन्देश दिया। कु. प्रीति चतुर्वेदी ने एक गीत सुनाकर सभी को मन्त्रमुग्ध किया। इस कार्यक्रम का संचालन स्वयंसेविका कु. प्रिया शर्मा एवं कृतिका चौधरी ने किया। इस प्रकार भव्यता व उत्साह के साथ मनोरंजक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम–अधिकारी कु. वन्दना भार्गव ने सभी उपस्थित जन को आभार माना।

माह सितम्बर–अक्टूबर २०१५ में जन्म–दिन वाले विद्यार्थियों को जन्म–दिन की हार्दिक शुभ–कामनाएँ।

स्पन्दन एकेडमी में शिक्षक-सम्मान समारोह आयोजित

जन्माष्टमी व शिक्षक–दिवस के अवसर पर स्पन्दन एकेडमी, गंजबासौदा द्वारा शिक्षक–सम्मान–समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्षता नगरपालिका अध्यक्ष–श्रीमती मधुलिका अग्रवाल ने की, मुख्य अतिथि श्री निशंक जैन, विधायक गंजबासौदा एवं विशेष अतिथि के रूप में समाजसेवी श्री कान्तीभाई शाह एवं प्रान्तीय मन्त्री–विश्व हिन्दू परिषद श्री राजेश तिवारी थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती व डॉ. राधाकृष्णन के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात् नवांकुर विद्यापीठ के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित ने स्वागत–भाषण प्रस्तुत किया तथा स्पन्दन–एकेडमी की नींव से लेकर वर्तमान स्थित तक प्रकाश डाला। संस्था के प्रबन्धक श्री निर्मल शर्मा, जो किन्हीं कारणों से उपस्थित नहीं हो सके, उन्होंने इण्टरनेट द्वारा भेजी गयी अपनी ऑडियो क्लिप के माध्यम से उपस्थित जनों को सम्बोधित किया।

इसके पश्चात् स्पन्दन–एकेडमी के नन्हे–मुन्नों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। इस अवसर पर नवांकुर की छात्राओं द्वारा गुरु–वन्दना प्रस्तुत की गयी। शिक्षक–सम्मान की श्रृंखला में नगर के वरिष्ठ शिक्षकों का सम्मान किया गया, जिनमें श्री

आर.के.चौगाँवकर, श्री जे. आर. खटावकर, श्रीमती सुशीला नामजोशी, श्रीमती कुमुदिनी दुबे, श्री विनोद कुमार जैन, श्री सन्तोष कुमार जैन, श्री ज्ञानप्रकाश भार्गव, श्री मणिमोहन मेहता, श्री शम्भूदयाल शर्मा, श्रीमती ताराबाई सोनी, श्री रमेश शर्मा, श्री पहलवानसिंह राजपूत, श्री शैलेन्द्र कुमार पिंगले,श्री शम्भूसिंह रघुवंशी, श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव का उपस्थित अतिथियों द्वारा शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न से सम्मान किया गया। साथ ही संस्था के संचालन में एवं कार्यक्रम में विशेष सहयोग के लिए नवांकुर विद्यापीठ के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित जी का भी सम्मान किया गया। उन्हें भी विधायक महोदय द्वारा शाल, श्रीफल एवं स्मृति–चिह्न प्रदान किया गया।

सभी उपस्थित अतिथियों ने इस कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम की समस्त सम्मान–राशि व सामग्री नागरिक सेवा समिति, गंजबासौदा की ओर से प्रदान की गई थी। इस अवसर पर अध्यक्ष, नागरिक सेवा–समिति–श्री कान्तीभाई शाह ने नवांकुर रासेयो इकाई को शिविर–ग्राम में शौचालय बनवाने के लिए दस हजार रुपये देने की घोषणा की। गौरतलब है कि स्पन्दन–एकेडमी एक ऐसी संस्था है, जहाँ उन साधनहीन निर्धन बच्चों को शिक्षा दी जाती है, जो अपने स्वयं के खर्च पर पढ़ाई नहीं कर सकते। यह संस्था ऐसे बच्चों को खोजकर, स्वयं आवागमन का साधन उपलब्ध कराकर स्वयं किताब–कॉपियों का खर्च उठाकर बिना किसी शुल्क के बच्चों को विद्याध्यन करा रही है।

इस कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने स्पन्दन–एकेडमी के कार्यों की सराहना करते हुए यथायोग्य सहयोग प्रदान करने की बात कही। इस अवसर पर स्पन्दन एकेडमी के सभी सदस्यों का भी सम्मान किया गया। संस्था के प्राचार्य श्री विनय खटावकर ने सभी उपस्थित अतिथियों का आभार माना। कार्यक्रम का संचालन सन्दीप रावत व वर्षा सेंगर ने किया।

साहित्य-सृजन

विद्याथियो एवं पाठको,

स्वतन्त्रता–दिवस और गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। क्रमश: का यह अंक जब आपके हाथों में होगा, तब शायद हम शिक्षक–दिवस मना रहे होंगे। एक मुक्तक हमारे सभी आचार्य जी और गुरुजनों के चरणों में समर्पित....

जो दिल से निकलती है वही दिलों तक जाती है।
नदियाँ खुद–ब–खुद समुन्दरों तक जाती हैं।
यह बताया है सिखाया है, हमें हमारे आचार्यजी ने,
जो राहें काँटों–भरी हो वही, मंजिलों तक जाती हैं।

ग्राम सेमरी में राष्ट्रीय सेवा–योजना द्वारा आयोजित किये गये शिविर में कवि सम्मेलन के कार्यक्रम के दौरान आदरणीय श्री शैलेन्द्र जी दीक्षित द्वारा मुझे एक महत्त्वपूर्ण काम सौंपा गया। वह है, नगर के कवि/ रचनाकारों की रचनाधर्मिता को क्रमश: के माध्यम से आपके लिए प्रस्तुत करना। इसी क्रम में हम इस अंक में नगर के युवा कविगण श्री नीलेश चतुर्वेदी, श्री कमलेश बंसल, श्री ध्रुव शर्मा, श्री सौरभ श्रीवास्तव की कविता आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

आदरणीय श्री दीक्षित जी द्वारा दी गयी जिम्मेदारी को पूरा करने में आपके सुझाव मेरा मार्ग प्रशस्त करेंगे। आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव से हमें सदैव अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। विद्यालय परिवार के मेरे मित्र के सुझाव पर मैं यह विचार आपके बीच साझा कर रहा हूँ। आप अगर किसी कवि विशेष की किसी विशेष कविता या किसी विषय विशेष पर कोई कविता या रचनाएँ क्रमश: में प्रकाशित करवाना चाहते हैं, तो कवि का नाम और रचना का नाम मुझे प्रेषित करें, ताकि हम आगामी अंक में उस रचना को प्रकाशित करने का प्रयास करें।

शहीदों को नमन करते हुए,
गुलशन में लगे रह गए उन फूलों को कुछ न होता है।
देवताओं के शीश पर चढ़ने डाली से टूटना होता है।।
सिर्फ नाम रख लेने से कुछ हासिल नहीं तुम कर पाओगे।
महापुरुष और शहीद कहलाने, शीश कटाना होता है।

आपके सुझाव और प्रतिक्रिया की राह देखता आपका कविमित्र ....

– **आशीष दुबे**
मोबा. 9993419880

बस माँ हो तुम

माँ ममता की धार हो तुम, जीवन का आधार हो तुम,
करुणा की बरसात हो तुम, पहला और अन्तिम प्यार हो तुम।
जीत हो तुम और हार हो तुम, त्याग हो तुम बलिदान हो तुम
गीत हो तुम कविता हो तुम और सारी धरा का गान हो तुम।
माँ आँखों के आँसू हो तुम, प्यारी–सी मुस्कान हो तुम
माँ ईश्वर की भक्ति हो तुम, पावन–सी शक्ति हो तुम।
मंदिर हो पूजा हो तुम और जीवन के त्यौहार हो तुम,
दर्शन हो तुम और ध्यान हो तुम, वेदों का सारा ज्ञान हो तुम।
मिट्टी की सौंधी खुशबू हो, पीपल जैसी छाँव हो तुम,
गुस्सा हो तुम और प्यार हो तुम, सारा लाड़–दुलार हो तुम।
सारी उपमाएँ व्यर्थ हैं माँ कैसे लिखूँ कि क्या हो तुम,
बस तेरी गोदी स्वर्ग है माँ और सारा सब कुछ नर्क है माँ।
जन्मे तुमसे जीवें तुममें, और अन्त करें तुममें विश्राम।
माँ स्वीकारो मेरे प्रणाम।

– **नीलेश चतुर्वेदी**
मो. 9826899279

अच्छी बातें

- मौन और मुस्कान दो शक्तिशाली हथियार होते हैं। मुस्कान से कई समस्याएँ हल की जा सकती हैं और मौन रहकर कई समस्याओं से दूर रहा जा सकता है।
- जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, खुद अच्छे बन जाओ। आपसे मिलकर शायद किसी की तलाश पूरी हो जाये।
- बात इतनी मधुर रखो कि कभी वापस लेनी पड़े, तो खुद को कड़वी न लगे।
- मंदिर में वो भगवान है, जिसे हमने बनाया। घर में माँ–बाप वो भगवान् हैं, जिन्होंने हमें बनाया है।
- एक मिनिट में जिन्दगी नहीं बदलती, पर एक मिनिट सोचकर लिया गया–फैसला पूरी जिन्दगी बदल सकता है।
- गलती कबूल करने और गुनाह छोड़ने में कभी देर नहीं करना चाहिए, क्योंकि सफर जितना लम्बा होगा, वापसी उतनी ही मुश्किल हो जाती है।

– **सलोनी रघुवंशी,** कक्षा–11 मैथ्स

भारत वर्ष महान

प्रजातन्त्र का देश है, भारत वर्ष महान,
ध्रुव तारा–सा चमक रहा, पर नहीं है हमें गुमान।
नहीं हैं हमें गुमान, अलौकिक जीवन–शैली,
सदा सद्भाव में रहते नहीं कोई चाल विषैली।
नहीं कोई चाल विषैली, ये है स्वाभिमान हमारा,
जगत में हो रहा, तभी सम्मान हमारा।
हो रहा सम्मान हमारा, है लिए सफलता रंग,
जात–पाँत और क्षेत्र का भेद नहीं हैं संग।
भेद नहीं हैं संग सबके अधरों पर है हास,
घट रही है वेदना और बढ़ रही है आस।
बढ़ रही है आस, सभ्य संस्कृति के कारण,
क्यों विश्व–गुरु हैं हम इसके हैं लाख उदाहरण।
हैं लाख उदाहरण सँभले है हम हर बार बिखर कर,
जग जाहिर है संस्कृति हमारी, सभ्यता है सर्वोच्च शिखर पर।
सभ्यता है सर्वोच्च शिखर पर, जगत भी हमसे सीखे,
वेदों के ज्ञाता हैं हम रहे संस्कारों के नीचे।
रहे संस्कारों के नीचे, तभी तो सबने माना,
अखण्ड भारत की ज्योति को सदा प्रचण्ड ही जाना।
सदा प्रचण्ड ही जाना, गौरवशाली इतिहास है,
झुके नहीं हैं, नहीं झुकेंगे, सबको ये विश्वास है।

कवि – **राजीव शर्मा 'सागर'**

गीत

जाति–पाँति संवर्ग–भेद को त्यागो और बिसराओ।
मानवता है धर्म हमारा, मानव–गुण अपनाओ।
एक सृजन–शिल्पी की रचना है यह सकल जहान,
जाति–जन्म से नहीं कर्म से मानव बने महान।
हर मानव है अंश प्रभु का फिर क्यों द्वेष रचाते,
जाति–धर्म के बन्धान सद्गुण से फीके पड़ जाते।
उच्च जाति का अहंभाव तजकर मानवता अपनाओ।
मानवता है धर्म हमारा मानव गुण अपनाओ।
कबीर ने थी रची साखियाँ जाति–भेद बिसराया,
ऊँचे कुल का निम्न जाति का एक द्वार से आया।
जाति–पाँति और छुआछूत के नाम पे किया छलावा,
देख के इस संसार की हालत ईश्वर भी शरमाया।
हीन भावना त्यागो मन से जाति–प्रथा ठुकराओ,
मानवता है धर्म हमारा मानव–गुण अपनाओ।
छुआछूत उपजाने वालो सुन लो कान लगाकर,
इनमें–तुममें फर्क नहीं कुछ यह कहते समझाकर।
एक पिता की सन्तानें हम सब है भाई–भाई,
भेदभाव का ईंधन भरकर किसने आग लगाई।
मानव–मात्र समान जगत में ''प्रज्ञा'' भाव जगाओ,
मानवता है धर्म हमारा मानव गुण अपनाओ।

–संजय श्रीवास्तव ''प्रज्ञा''
(हास्य–व्यंग्य कवि, गंजबासौदा)

प्रकृति गीत

प्रकृति के क्रोध से पीड़ाएँ कई तो होंगी,
अधिक वर्षा कहीं, सूखा से दरकी तो जमीं होंगी,
प्रकृति को मान दो, पूर्ण सम्मान हो।
ये जलवायु या हर मौसम, प्रकृति की देन है सारी,
इन्हीं के ताल मेलों से, चले ये सृष्टि तो सारी,
जो सूरज–चाँद क्षण–भर में, जग को रोशन करें सारा,
बना सकता है क्या कोई, वृहद् ऐसा भी उजियारा।
धूप भी काम आती, चाँदनी भी सुहाती।
प्रकृति के क्रोध से............
ये झरने और ये घाटियाँ, क्या कोई बना पाया,
शीत और ऊष्ण कुण्डों की, निकटता को समझ पाया,
वे पर्वत–नदियाँ और झीलें, पहाड़ियाँ गुफा वाली,
ये जंगल प्राकृतिक उपवन, लगाये क्या इन्हें माली,
जंगल मत उजाड़ो, प्रकृति को मत बिगाड़ो।
प्रकृति के क्रोध से............
आग, पानी, हवा, धरती, वृहद् ये आसमाँ सारा,
यही हैं पाँच तत्त्वों से, बना तो है जहाँ सारा,
जीव सब में एक जैसा, पशु–पक्षी–मनुष्यों का,
जंगली या पालतू हों, न आवे भाव हिंसा का,
शिखर इच्छा जगाओ, वन्य प्राणी बचाओ,
प्रकृति के क्रोध से, पीड़ाएँ कई तो होगी
अधिक वर्षा, कहीं सूखा से दरकी तो जमीं होगी।
प्रकृति के क्रोध से............

शिखरचन्द्र जैन 'शिखर', गंजबासौदा

नशा न कीजिये

नशा न कीजिये – बीड़ी, तम्बाकू पान का,
नशा न कीजिये – यूँ ही झूठी शान का,
नशा न कीजिये – किसी के अपमान का, अपने झूठे मान का,
नशा न कीजिये – गाँजा, शराब का,
नशा न कीजिये – अराब, खराब का,
नशा न कीजिये – बीमार होने का,
नशा न कीजिये – गरीब को सताने का,
नशा न कीजिये – झूठा रौब बताने का,
नशा न कीजिये – पाप की कमाई का,
नशा न कीजिये – आलस की जम्हाई का,
नशा न कीजिये – रिश्वत देने का,
नशा न कीजिये – दहेज लेने का,
नशा न कीजिये – किसी से जलने का,
नशा न कीजिये – उल्टे मार्ग पर चलने का,
नशा न कीजिये – गंदगी फैलाने का,
नशा न कीजिये – जल को व्यर्थ बहाने का,
नशा न कीजिये – जाति रंग भेद का,
नशा न कीजिये – बीती बात के खेद का,

नशा करना है, तो कीजिये –

नशा करना है, तो कीजिये – माता–पिता की सेवा का,
नशा करना है, तो कीजिये – गुरुजन की मेवा का,
नशा करना है, तो कीजिये – दान–दया और धर्म का,
नशा करना है, तो कीजिये – अच्छे विचार और सद्कर्म का,
नशा करना है, तो कीजिये – स्वच्छ समृद्ध भारत बनाने का,
नशा करना है, तो कीजिये – बिना प्रदूषण त्यौहार मनाने का,
नशा करना है, तो कीजिये – बेटियों को बचाने का,
नशा करना है, तो कीजिये – बेटियों को पढ़ाने का,
नशा करना है, तो कीजिये – नदियों की सफाई का,
नशा करना है, तो कीजिये – मेहनत की कमाई का,
नशा करना है, तो कीजिये – छुआ–छूत मिटाने का,
नशा करना है, तो कीजिये – सबको न्याय दिलाने का,
नशा करना है, तो कीजिये – जनहित संघर्ष का,
नशा करना है, तो कीजिये – समहित उत्कर्ष का,
नशा करना है, तो कीजिये – वेदों के ज्ञान का,
नशा करना है, तो कीजिये – सभी के सम्मान का,
नशा करना है, तो कीजिये – आन–बान–शान का,
नशा करना है, तो कीजिये – राष्ट्र पर बलिदान का।

रचयिता – **ध्रुव शर्मा** (युवा कवि),
राष्ट्रीय कवि संगम, जिला इकाई–विदिशा

गुरु की महिमा

दुनिया में चैन और अमन करें, हर घर महकाकर चमन करें,
विश्वास जो बहके जीवन में, तब मात्र गुरु को नमन करें,
विश्वास बनाये रखने जीवन–मूल्य चुकाना पड़ता है,
परम गुरु के चरणों में, ये शीश झुकाना पड़ता है।
ज्ञान जो भी मिला मुझे, मेरे पास रुका नहीं,
जैसे पानी भरने का पात्र कोई चटका हो।
बढ़ रहा था मन लगा के मंजिल की ओर जब,
ख्वाहिशों ने खींच मुझे पत्थरों पे पटका हो।
मन मेरा बेचैन होके इसलिए बड़ा नहीं,
जैसे कुछ पाने के सपनों में अटका हो।
भटके हुए परिन्दे को भी मार्ग दिखाना पड़ता है,
परम गुरु के चरणों में, ये शीश झुकाना पड़ता है।
दुनिया की भीड़ रास नहीं आयी मुझे,
भीड़ का माहौल मुझे तीखा लगने लगा।
जबसे गुरु का तेज आया मेरी जिन्दगी में,
तबसे भानु का तेज फीका लगने लगा,
गुरुजी के आने से जो, यहाँ की तरक्की हुई,
बासौदा भी अमेरिका लगने लगा।
मेहनत कर करके खुद को, शोलो में तपवाना पड़ता है,
परम गुरु के चरणों में, ये शीश झुकाना पड़ता है।
जबसे मैंने सर झुकाया गुरु–चरणों में,
तबसे नाकामियों से दूरी मेरी हो गयी,
जीने के लिए मैं कोई राह चाहता था जैसे,
गुरुजी को पाके मेरी चाह पूरी हो गयी।
सपना पूरा करना हो तो ध्यान लगाना पड़ता है
परमगुरु के चरणों में, ये शीश झुकाना पड़ता है।

– **सौरभ श्रीवास्तव (भानू)**

बिटिया

हर घर में हर आँगन में अभियान चलाना है।
अपने घर की हर बिटिया को हमें पढ़ाना है।
जाये स्कूल वो जब नाम करेगी कुल का,
पढ़–लिखकर जब करे नौकरी नाम करेगी कुल का,
ये कर्त्तव्य हमारा है हमें निभाना है।

पढ़–लिख जायेगी तो वो ज्ञान–विज्ञान पहचानेगी,
जीवन कैसे जीते हैं, तभी वो जानेगी
मिले राह में कोई भी उसको ये बतलाना है।

अपने आँगन में एक खुशी चाहिये,
खेलती–कूदती इक हँसी चाहिये,
दे सकें प्यार दोनों जहाँ के उसे
मेरे आँगन में बस लाड़ली चाहिए।

जमाने भर की बुराई से वो लड़ना सिखा गयी।
कहाँ मैं आपके काबिल था वो काबिल बना गयी।
जब साथ में थी वो तो हमने कद्र कहाँ की,
मरने के बाद माँ हमें जीना सिखा गयी।

– **कमलेश बंसल,** गीतकार

शिक्षक की कलम

अमन की गुहार,
तबाही का ये मंजर,
ना जाने कब थमेगा
बर्बादियों का आसमाँ,
कब तलक बरसेगा।
कर लिया है इसने,
कितने मासूमों को आगोश में।
क्यों नहीं आया इंसान,
अब तलक होश में,
पथरा गयी हैं आँखें,
देखने को अमन और शान्ति।
ना जाने कब खत्म होगी,
आतंकवाद की क्रान्ति।

– इंदु मिश्रा
डॉल्फिन–यूडीटी

रक्षाबन्धन

नहीं चाहिये मुझको हिस्सा, माँ–बाबा की दौलत में,
चाहे तो कुछ भी लिख जाएँ, भैया मेरी वसीयत में।
नहीं चाहिये मुझको झुमका, चूड़ी–पायल और कंगन,
नहीं चाहिये अपनेपन की कीमत पर बेगानापन।
मुझको नश्वर चीजों की दिल से कोई दरकार नहीं,
सम्बन्धों की कीमत पर कोई सुविधा स्वीकार नहीं।
माँ के सारे गहने कपड़े–तुम भाभी को दे देना,
बाबूजी का जो कुछ है, सब खुशी–खुशी तुम ले लेना।
नहीं भेजना तोहफे मुझको, चाहे तीज त्योहारों में
पर थोड़ा–सा हक दे देना, बाबुल के गलियारों में।
रुपया–पैसा कुछ ना चाहूँ, बोले मेरी राखी है,
आशीर्वाद मिले मैके से, मुझको इतना काफी है।
तोड़े से भी ना टूटे जो, ये ऐसा मन बन्धन है,
इस बन्धन को सारी दुनिया कहती रक्षाबन्धन है।
तुम भी इस कच्चे धागे का, मान जरा–सा रख लेना,
कम–से–कम राखी के दिन, बहना की राह ज़रा तक लेना।

– **रश्मि प्रकाश,** यूडीटी–डॉल्फिन

मौन की महिमा

मौन सर्वोत्तम भाषण है। मौनं परम् भूषणम्। आवश्यकता से एक शब्द भी अधिक न बोलना व्यावहारिक मौन है। एक शब्द से काम चले, तो दो शब्द नहीं बोलो। जो बोलो, वो सत्य, प्रिय, मधुर व हितकर हो। तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर। बोलने से व्यक्ति की योग्यता, स्वभाव, शील तथा कुल आदि सबका आभास मिलता है। भगवान् श्रीराम भी अवसरोचित बोलते थे। वे जरूरत से ज्यादा तथा असमय एक शब्द भी नहीं बोलते थे। नपी–तुली, प्रिय, मधुर व हितकर वाणी ही बोलते थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन–दर्शन करें, तो वे भी बहुत कम बोलते थे, लेकिन इतने महान् हो गये कि उन्हें लौह–पुरुष की संज्ञा से विभूषित किया गया। महात्मा गाँधी हर सोमवार को मौन रखकर उस दिन अधिक कार्य करते थे। इतने बड़े ब्रिटिश साम्राज्य को गाँधी जी के मौन युद्ध–सत्याग्रह ने झुका दिया। न बोलने में नौ गुण हैं। द्रोपदी के दो शब्द "अन्धे का बेटा अन्धा" ने महाभारत का युद्ध करवा दिया।

मौन पर महापुरुषों के विचार –

–मौन में शब्दों की अपेक्षा वाकशक्ति अधिक होती है।

– आद्यगुरु शंकराचार्य

– जैसे घोंसला सोयी हुई चिड़ियों को आश्रय देता है, वैसे ही मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देता है।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

– जहाँ तक हो सके, मौन रहो। बेकार का कभी एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिये। एक से काम चले, तो दो शब्द कभी नहीं बोलना चाहिये। कभी–कभी मौन कितने ही अनर्थों को रोकने का अमोघ उपाय बन जाता है।

– महात्मा गाँधी (बापू जी)

मौन में अथाह सामर्थ्य है। जिसने भी इसका रहस्य जानकर इसका पालन किया, वह हजारों व्यक्तियों के बीच भी अलग से चमका है।

हम इस ऐतिहासिक जगत में इतने बहिर्मुख हो गये हैं कि उस परमात्मा के आदेश को, सन्देश को समझ ही नहीं पाते; इसलिए विजयी नहीं हो पाते हैं।

– राजेन्द्रसिंह यादव
सहा. शिक्षक

हेल्थ एडवाइस

1. हर व्यक्ति को रोज 15 से 20 मिनिट पैदल चलना चाहिये जिससे हमारे शरीर का रक्त संचार अच्छा रहता है, जिससे कई घातक बीमारियों से बचा जा सकता है।
2. रात का खाना हमें सोने के 2 घण्टे पहले खाना चाहिये।
3. रात को देर खाना खाने से हमारा दिल, फेंफड़े, लिवर सभी सोते वक्त भी काम करते रहते हैं, जिससे दिल व अन्य हिस्सों पर दबाव बढ़ता है, जो खतरनाक हो सकता है, इसलिये स्वस्थ रहने के लिए 15–20 मिनिट पैदल चलें और समय पर भोजन करें, क्योंकि पहला सुख है निरोगी काया।

– प्रशान्त नामदेव, पुस्तकालय प्रभारी

किताबें हमारी बहुत अच्छी साथी होती हैं, इनसे हमें जो ज्ञान मिलता है, जिन्दगी भर हमारे साथ रहता है। क्योंकि हमारी जमीन–धन–दौलत तो हमसे कोई छीन सकता है, पर हमारा ज्ञान हमसे कोई नहीं छीन सकता है, क्योंकि ज्ञान एक ऐसी पूँजी है, जो बाँटने से बढ़ता ही है, कभी कम नहीं होता।

देश के पड़ोसी देशों को याद रखने के लिए निम्न सूत्र याद रखो –

बचपन में MBA किया :–

ब – बांग्लादेश,
च – चीन,
प – पाकिस्तान,
न – नेपाल,
में (Silent)
M – म्यांमार,
B – भूटान,
A – अफगानिस्तान,
किया। (Silent)

– कु. न्यासा शर्मा
कक्षा–7 डॉल्फिन

अपना ज्ञान बढ़ायें

क्या आप जानते हैं ?

1. मनुष्य में प्रति मिनिट श्वास की गति 16-17 बार होती है।
2. श्वसन की गति एवं नाड़ी की गति का अनुपात 1:4 होता है।
3. मानव एक श्वास में 500 मिमी. हवा खींचता है।
4. छोटी आँत की लम्बाई लगभग 18-20 फीट होती है।
5. मनुष्य की बड़ी आँत की लम्बाई 6 फीट होती है।
6. मनुष्य की श्रवण क्षमता 10 से 20000 हर्ट्ज होती है।
7. जीव में स्वादवेष्ठित कलियों की संख्या 9000 है।
8. दाँतों की कुल संख्या 32 है।
9. घ्राणेन्द्रिय कोशिकाओं की कुल संख्या 5 करोड़ है।
10. पुरुषों में हृदय का भार 300 ग्राम है।
11. महिलाओं में हृदय का भार 250 ग्राम है।
12. मनुष्य की सामान्य हृदय-गति 72 बार प्रति मिनिट है।
13. रक्त परिवहन में लगा कुल समय 28सेकण्ड है।
14. पुरुष के मस्तिष्क का भार 1.380 ग्राम है।
15. स्त्री के मस्तिष्क का भार 1.250 ग्राम है।

- **आकांक्षा चौधरी,** कक्षा 11 (गणित)

आओ जानें - अपना मध्यप्रदेश

राज्य - मध्यप्रदेश (हृदय-प्रदेश, सोया स्टेट, टाईगर स्टेट, नीम राज्य)
राजधानी - भोपाल
स्थापना तिथि - 1 नवम्बर 1956
वर्तमान स्वरूप - 1 नवम्बर 2000
स्थिति - देश का सबसे मध्यवर्ती भाग
भौगोलिक स्थिति - 21.6° उत्तर अक्षांश से 26.54° अक्षांश तक तथा 74° पूर्व देशान्तर से 82.47° पूर्वी देशान्तर
राज्य का विस्तार - लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक 870 किमी. चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक 605 किमी.
क्षेत्रफल - 3,08,252 वर्ग किमी.
राज्य की भाषा - हिन्दी
सीमाएँ - उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तर पूर्व एवं पूर्व में छत्तीसगढ़, दक्षिण में महाराष्ट्र, पश्चिम में राजस्थान एवं गुजरात
लोकसभा सीटें - 29
राज्यसभा सीटें - 11
विधानसभा सीटें - 230

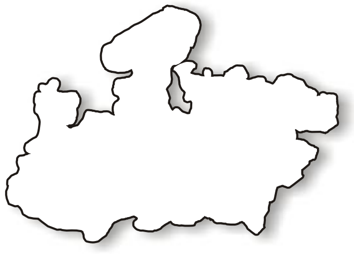

सम्भाग - 10
जिले - 51
तहसील - 41
विकासखण्ड - 313
शहर (2001) - 394
नगर निगम - 14
नगर पालिका - 96
नगर पंचायत - 248
जिला पंचायत - 51
जनपद पंचायत - 313
ग्राम पंचायत - 23040
कुल ग्राम - 55393
साक्षरता दर - 70.76%
पुरुष साक्षरता - 80.50%
महिला साक्षरता - 60%
पुरुष जनसंख्या - 3,76,12,920
महिला जनसंख्या - 3,49,84,645
जनसंख्या घनत्व - 236
लिंगानुपात - 930
सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला - इन्दौर(जनसंख्या 32,72,335)
सबसे कम जनसंख्या वाला जिला - हरदा (5,70,302)
सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व - भोपाल, 854
न्यूनतम जनसंख्या घनत्व - डिण्डौरी, 94
सर्वाधिक साक्षरता वाला जिला - जबलपुर, 82.5%
न्यूनतम साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर, 37.2%
सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला - इन्दौर, 89.2%
सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला - भोपाल 76.6%
राजकीय वृक्ष - बरगद
राजकीय पक्षी - दूधराज
राजकीय पशु - बारहसिंगा
राज्य दिवस - 1 नवम्बर
राज्य के राज्यपाल - श्री रामनरेश यादव
राज्य के मुख्यमन्त्री - श्री शिवराजसिंह चौहान
राज्य के उच्च न्यायालय - जबलपुर एवं ग्वालियर में खण्डपीठ

- **आकाश कुर्मी,** कक्षा-9 ए

बच्चों की कलम

आजादी का आगाज

आजादी के कुछ पल याद रहे बस,
आजाद परिन्दों की उड़ान भूल गये
अधिकारों पर लड़ते–लड़ते,
कर्त्तव्यों का संविधान भूल गये।
जब आजादी की जंग लड़ी थी,
देश का खाका याद रखा था।
अब सड़क से संसद गलियारों में
देश चलाने का विधान भूल गये। अधिकारों ....
मर मिटते है, आतंक की सूली पर
मौत का ताण्डव देख रहे है,
सम्प्रदायों के नाम पर बँटकर
शहीदों का पैगाम भूल गये। अधिकारों ....
भूले कृष्ण की गीता को,
पैगम्बर की शुचिता को,
बुद्ध की करुणा बिसराई,
महावीर की अहिंसा को। अधिकारों ....
विवेकानन्द का आनन्द है छूटा,
भूले यीशू की सेवा को,
बापू–बापू जपने वाले,
बापू का बलिदान भूल गये। अधिकारों ....
बाजारवाद की बलिवेदी पर,
हमने की हजारों भूलें।
कृष्ण–सुदामा का संवाद है भूले,
अकबर–बीरबल का वार्त्तालाप है भूले।
महाराणा की हुँकार है भूले,
तानसेन की तान है भूले,
भूल गए कबीरा का गान,
मीरा की तान है भूले। अधिकारों ....
आजाद–भगत और सुभाष का मान हैं हम,
श्वेत हरित और नीले भारत का सम्मान हैं हम,
तीन रंगों से सज्जित ध्वज की आन हैं हम,
आजादी के प्राण जहाँ हैं, उन बच्चों की मुस्कान हैं हम,
मायानगरी की चकाचौंध में तक्षशिला का ज्ञान भूल गये।
अधिकारों........
राजनीति के वॉग्जाल में फँसकर,
ऐसे उलझे हम भारतवासी,
धन–लोलुपता पद–प्रतिष्ठा याद रही,
असली आजादी के प्राण भूल गये।
अधिकारों पर लड़ते–लड़ते
कर्त्तव्यों का संविधान भूल गये। अधिकारों ....

– दिनकर कद्रे

संकलन–शाश्वत कद्रे, कक्षा 9 ए (डॉल्फिन)

वक्त नहीं

हर खुशी है लोगों के दामन में, पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं।
दिन–रात ढूँढती दुनिया में, जिन्दगी के लिए ही वक्त नहीं है।
माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं है।
सारे रिश्तों को हम मार चुके, पर उन्हें दफनाने का वक्त नहीं।
गैरों की क्या बात करें, जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं।
आँखों में नींद भरी है, पर सोने के लिए ही वक्त नहीं।
दिल है गमों से भरा, पर रोने का ही वक्त नहीं।
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े, कि थकने का भी वक्त नहीं।
पराये एहसानों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं।

– **सुमित दाँगी,** कक्षा 9 जी

सबके गीत समान रे

धरती प्यारी, अम्बर प्यारा, प्यारा हर इंसान रे!
सरगम चाहे अलग–अलग पर, सबके गीत समान रे!!
हम भारत के वीर सिपाही, सेवा अपना धर्म है!
चरणों में आँधी–सी गति है, और हाथों में कर्म है!!
रहते हम तैयार हमेशा भातृ–प्रेम के नाम पर!
करते सब विश्वास हमारा, यही अनोखा मर्म है!!
समता प्यारी, ममता प्यारी, प्यारा नव उत्थान रे!
सरगम चाहे अलग–अलग, पर सबके गीत समान रे!!
हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई, सब बाहर के नाम हैं!
सबके भीतर रहे हुए बस, एक सरीखे राम हैं!!
सबको यही सिखाते भैया, गीता और कुरान हैं!
मन के द्वार खुले हैं, फिर क्या हिन्दू क्या इस्लाम है!!
मन्दिर प्यारा, मस्जिद प्यारी, प्यारे देवस्थान रे!
सरगम चाहे अलग–अलग, पर सबके गीत समान रे!!
हर मानव को गले लगाकर, पूछो मन की बात रे!
सूखे उपवन को दे दो तुम सावन की वर्षा रे!!
काँटों की पीड़ा पर रक्खो, फूलों की मुस्कान रे!
कलियों के घर पहुँचा दो तुम, शबनम की सौगात रे!!
तितली प्यारी, भँवरे प्यारे, प्यारा हर उद्यान रे!
सरगम चाहे अलग–अलग, पर सबके गीत समान रे!!

– **अक्षय श्रीवास्तव,** कक्षा 9 (ए)

संयुक्त परिवार

वो पंगत में बैठकर निवालों को तोड़ना,
वो अपनों की संगत में रिश्तों को जोड़ना,
वो दादा की लाठी पकड़कर गलियों में घूमना,
वो दादी का बलैयां लेना और माथे को चूमना,
सोते वक्त दादी पुराने किस्से–कहानियाँ कहती थीं। आँख खुलते ही माँ की आरती सुनायी देती थी। माली अपने हाथ से हर बीज बोता था, घर ही अपने–आप में पाठशाला होता था, संस्कार और संस्कृति रग–रग में बसते थे, उस दौर में हम मुस्कुराते नहीं खुलकर हँसते थे। इंसान खुद से दूर अब होता जा रहा है। वो संयुक्त परिवार का दौर अब खोता जा रहा है। आज गर्मी में ए.सी. और जाड़े में हीटर है और रिश्तों को मापने के लिए स्वार्थ का थर्मामीटर है। वो समृद्ध नहीं थे, फिर भी दस–दस को पालते थे, खुद ठिठुरते रहते और कम्बल बच्चों पर डालते थे। मैं आज की युवा पीढ़ी को एक बात बताना चाहूँगा, उनके अन्तर्मन में एक दीप जलाना चाहूँगा। अपने–आप से सारी उम्र नजरें चुराओगे, अपनों के न हुए तो किसी के न हो पाओगे। सब कुछ भले ही मिल जाये, पर अपना अस्तित्व गवाँओगे, बुजुर्गों की छत्रछाया में ही महफूज रह पाओगे। अगर पिता दु:खी रूठे होंगे, तो तुम्हारी होली बेमानी और दीवाली झूठी होगी।

अपनों से बीच की अब दूरियाँ सारी मिटा लो, रिश्तों की दरार भर लो, उन्हें फिर से गले लगा लो।

– **मुस्कान सेन,** कक्षा 9 (बी)

माँ, जिन्दगी की हर खुशी आपमें बसती है।
माँ, जिन्दगी की हर हँसी आपमें बसती है।
माँ, आपको वो रब भी क्या दुआ दे क्योंकि
माँ, जिन्दगी की हर दुआ आपमें बसती है।।
माँ, जिन्दगी का सबसे बड़ा तोहफा आप हैं।
माँ, जिन्दगी में आप से बड़ा ना कोई और है।
माँ, इन्सान तो बहुत मिलते हैं राहों में पर,
माँ, आप सबसे खास हैं, क्योंकि इंसान तो ठीक है,
माँ, वो रब भी आपका गुलाम है।
माँ, जिन्दगी की हर खुशी आपमें बसती है।
माँ, जिन्दगी की हर हँसी आपमें बसती है।

– **दिव्यांशी दीक्षित,** कक्षा 9 (बी)

मात–पिता

सुख का सूरज यहाँ नहीं ढलता है,
जिन्दगी का सुकून यहाँ मिलता है।
माँ के आँचल की ठण्डी छाया है।
पिता के प्यार का सिर पर साया है।।
थामकर हाथ चलना सिखाया हमें।
प्यार की कविताओं में सुलाया हमें।।
आशा नहीं चुकेगा हमसे ये जो कर्ज है।
मात–पिता की चरणों में स्वर्ग है।।
मात–पिता सा न कोई दूजा है।
इनकी सेवा करें यही पूजा है।।
ये घर मन्दिर है, यहाँ हम रहते हैं।
अपना भगवान हम इनको कहते हैं।।

।। माता–पिता की सेवा परम धर्म है।।

– **ऋषिराज रघुवंशी,** कक्षा– 9 ई

आओ मिलकर नमन करें

इस धरती पर गंगा है, जो पाप मुक्त कर देती है।
रमा–शारदा–ज्ञान–लक्ष्मी से झोली भर देती है।
गौरी काली चण्डी ज्वाला, मारे हर शैतान को,
आओ मिलकर नमन करें, हम अपने हिन्दुस्तान को।

गुरुओं को भगवान् समझकर, इनको पूजा जाता है।
और बड़ों का आदर करना, हिन्दुस्तान सिखाता है।
भेद नहीं हम एक समझते, दीवाली रमजान को,
आओ मिलकर नमन करें, हम अपने हिन्दुस्तान को।

इसकी रज से खुशबू आती, कितने ही बलिदानों की,
मकसद था आजाद कराना, नहीं फिकर थी जानों की,
आँखों में था सपना, हमको पाना है पहचान को,
आओ मिलकर नमन करें, हम अपने हिन्दुस्तान को।

लगे कुम्भ के मेले तो फिर, विश्व जमा हो जाता है,
देख धर्म के प्रति श्रद्धा, वो खुद इतना चकराता है,
अभी समर्पित कर देगा, वो दिल धड़कन और जान को,
आओ मिलकर नमन करें, हम अपने हिन्दुस्तान को।

देख एकता दुश्मन की भी, हो जाती सिट्टी–पिट्टी,
दुनिया भी तो सोच रही क्यों, खास है भारत की मिट्टी,
स्वयं देवता भी गायें जिस धरती के गुणगान को,
आओ मिलकर नमन करें, हम अपने हिन्दुस्तान को।

– **कु. प्रज्ञा श्रीवास्तव,** कक्षा 12 (जीव विज्ञान)

सूर्य–रूपी गुरु

अन्धकार की चादर काटी, आप सूर्य बन आये,
पर्वत–सी पीड़ा पिघलायी, सात्विक गुण उमगायें।
संस्कार से हीन मनुज था, पाप–पंक में डूबा,
दुश्चिन्तन में उलझ–उलझकर, जीवन से था ऊबा।
सरस्वती–विद्या से जग में, शुचिता–सुमन खिलाये
अन्धकार की चादर काटीं, आप सूर्य बन आये।
सन्त–सुधारक रूप आपका, दिशा–दिशा में छाया,
लेखक, वक्ता और मनीषी, रूप सभी को भाया,
प्रेम, त्याग, अपने पर से जाग्रति के बीज,
अन्धकार की चादर काटी, आप सूर्य बन आये।

– **मृदुल शर्मा,** कक्षा 10 ई

भाग्य और बुद्धि

भाग्य और बुद्धि लड़ बैठे, वाद–विवाद बहुत कर बैठे।
भाग्य कहे कि मैं हूँ बड़ा।
बुद्धि कहे कि मैं हूँ बड़ी।
न्यायाधीश आत्मा के बिन,
न्यायालय में बहस चली।
भाग्य और बुद्धि.......
किया निवेदन कर्म से आकर,
भाग्य हमारा बेटा है,
पूरा विश्व मुझे ही देखे
भाग्य को किसने देखा है।
प्रेरणा कर्म की माता आयी,
उसने अपनी शान जतायी,
मेरा कहना करता है कर्म,
मैं हूँ बड़ी कर्म हो कैसे ?
भाग्य और बुद्धि......
न्यायाधीश आत्मा बोली,
सबकी सुनी, बहस भी होली,
बिन बुद्धि के उठे न प्रेरणा,
बिना प्रेरणा कर्म हो कैसे ?
बिना कर्म के भाग्य हो कैसे ?
भाग्य बड़ा हो सकता है कैसे ?
सबसे श्रेष्ठ बुद्धि को मानो,
ईश्वर से बुद्धि को माँगो।
बुद्धि बड़ी ही है तुम सबसे,
भाग्य हारे पीछे जा बैठे।
भाग्य और बुद्धि......

– **कु. आकांक्षा चौधरी,**
कक्षा 11 (गणित)

बचपन

कागज की कश्ती थी, नदी का किनारा था।
खेलने की मस्ती थी, दिल ये आवारा था।
कहाँ आ गये इस समझदारी के दलदल में,
यह नादान बचपन ही कितना प्यारा था।

– **कु. चंचल शर्मा,** कक्षा–10 अ

एक लड़की

एक लड़की थी,
जो सुन नहीं सकती थी।
फिर भी आपसे दोस्ती कर सकती थी,

एक लड़की थी –
बचपन में गम्भीर बीमारी से ग्रस्त थी,
तो आँखों की रोशनी चली गयी।
साथ में, सुनने की क्षमता चली गयी,
जिसकी आँख में रोशनी न थी।
कानों में आवाज पहचानने की क्षमता न थी।

फिर भी उसने दूसरों की आँखों की रोशनी देने के लिए
87 वर्षों तक संघर्ष किया,
अन्धों और अपंगों को,
जी–भर कर जीना सिखाया,
उसने दर्जनों भर किताबें लिखीं,
मूक–बधिरों की भाषा लिखी।
पहली नेत्रहीन, मूक बधिर
ग्रेजुएट लड़की बनी,

कौन थी वह ?
जिसने कहा–
अपंगता जीवन का अन्त नहीं,
अपंग भी अपने काम से,
अँधेरों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।
शारीरिक क्षमता मनुष्य को मजबूर नहीं,
मशहूर बनाती है।

असामान्य व्यक्ति के लिए असाधारण काम,
उसके मन और विचारों की शक्ति का परिणाम है।
वह लड़की थी – **हेलन केलर।**

– **कु. रोशनी मैना**
कक्षा 10 अ

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है ? निर्झर है।
मस्ती ही इसका पानी है।
सुख–दु:ख के दोनों तीरों से।
चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अन्तर से।
किस अंचल से उतरा नीचे।
किन घाटों से बह कर आया।
समतल में अपने को खींचें।
निर्झर ये गति है, यौवन है।
वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है, चलने की।
अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता।
वन के पेड़ों से टकराता है।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता।
चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती है, गिरती हैं।
नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे।
निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर में गति ही जीवन है।
रुक जायेगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जायेगा मानव।
जग दुर्दिन की घटियाँ गिन–गिन।
निर्झर कहता है।बढ़े चलो।
तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है – बढ़े चलो।
सोचो मत होगा क्या चलकर।
चलना है केवल चलना है।
जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है, रुक जाना ही।
निर्झर यह झरकर कहता है।

– **अमित मायवाड़**
कक्षा– 9 बी

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

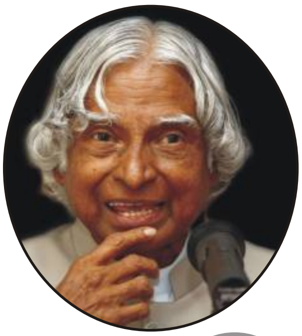

आधुनिक भारत के भगवान चले गये।
इस देश के असली स्वाभिमान चले गये।
धर्म को अकेला छोड़ विज्ञान चले गये,
एक साथ गीता और कुरान चले गये।
मानवता के एकल प्रतिष्ठान चले गये,
धर्मनिरपेक्षता के मूल संविधान चले गये।
इस सदी के श्रेष्ठ ऋषि महान चले गये,
कलयुग के इकलौते इन्सान चले गये।
ज्ञान–राशि के अमित निधान चले गये,
सबके प्यारे अब्दुल कलाम चले गये।
आज समय का पहिया घूमा पीछे सब कुछ छूट गया,
एक सितारा भारत माता की आँखों का टूट गया।
उसकी आँखें बन्द हुई, तो पलकें कई निचोड़ गया।
सदियों तक न भर पायेगा, वो खालीपन छोड़ गया।
ना मजहब का पिछलग्गू था, ना गफलत में लेटा था,
वो अब्दुल कलाम तो केवल भारत माँ का बेटा था।
बचपन से ही खुली आँख से, सपने देखा करता था,
नाविक का बेटा हाथों में, सात समन्दर भरता था।
था बन्दा इस्लाम का लेकिन कभी न ऐंठा करता था,
जब जी चाहा सन्तों के, चरणों में बैठा करता था।
एक हाथ में गीता उसने, एक हाथ कुरान रखा,
नहीं शरीयत में उलझा वो, अपनी कीमत भाँप गया।
कलम उठाकर, अग्निपंख से अन्तरिक्ष को माप गया,
दाढ़ी–टोपी के लफड़ों में, नहीं पड़ा अलमस्त रहा।
वो तो केवल मिसाइलों के, निर्माण में मस्त रहा।
मर्द मुजाहिद था असली, हर बन्धन उसने तोड़ा था,
अमरीका को ठेंगा देकर, एटम बम को फोड़ा था।
मोमिन का बेटा, भारत की पूरी पहरेदारी था,
ओवैसी, दाउद, सौ–सौ अफजल गुरुओं पर भारी था।
आकर्षक व्यक्तित्व, सरल थे, बच्चों के दीवाने थे,
इस चाचा के आगे, चाचा नेहरू बहुत पुराने थे।
माथे पर लटकी जुल्फों ने, पावन अर्थ निकाल दिया,
यूँ लगा था भारत माँ ने, आँचल सर पर डाल दिया।
गौरव को, गौरव है तुम पर, फक्र लिए हूँ सीने में,
जीना तो बस जीना है, अब्दुल कलाम – सा जीने में।
माना अब भी इस भारत में, कायम गजनी–बाबर हैं,
लेकिन ऐसे मोमिन पर, सौ–सौ हिन्दू न्यौछावर हैं।

– राजेन्द्र रघुवंशी,
कक्षा–12 गणित

संस्कृति

पहले आये चैत्र का महीना,
चना मटर फिर क्या कहना।
वैशाख में पड़े वैशाखी,
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख के साथी।
जेठ में गर्मी पड़े कड़ाका,
भागे दुपहरी गप सड़ाका।
आषाढ़ में बादल घुमड़ायें,
तपती धरती प्यास बुझायें।
सावन में पड़ते हैं झूले,
रक्षाबन्धन बहना नहीं भूले।
भादों जब बादल गरजे,
रिमझिम–रिमझिम बादल बरसे।
क्वांर मास में पड़े दशहरा,
धान की बाली लगे सुनहरा।
कार्तिक मास की बात निराली,
दीप सजे जगमग दीवाली।
अगहन मास खुश रहे किसान,
फसलों से भरता खलिहान।
पूस में जब ठण्ड गहराई,
माँगे कम्बल और रजाई।
धूप माघ की सबको भाये,
कूके कोयल आम बौराये।
फागुन में पड़ती होली,
ढोल–नगाड़ा मस्तों की टोली।

– सतेन्द्र दाँगी
कक्षा 9 (ई)

Poem....

The Charm of the childhood was in its calm
no corners at heart no edges to harm.
It meant to hold the hands of my parents while a walk
ant to be with them all the time around the clock.
Happiness was then defined by having family around.
It was to roam the region with no binding bound.
It was only tiny trifels that made me cry
With a few loving words of MAA again felt high.
Hopes have been the hymns never to end.
Falling and raising were two together-ed strands
An extremely care free life with no strives
to lead to a feel filled with umpteen pure smiles.
Charming is my childhood days yet and will always be
No day will be so much pleasurous. I can foresee.

Lokesh Dangi, 8th (B) Dolphin

डॉल्फिन की छात्रा कु. श्रेया नेशनल लेवल शतरंज प्रतियोगिता के लिए चयनित

नगर गंजबासौदा के लिए बड़े हर्ष एवं गौरव का विषय है कि डॉल्फिन की छात्रा कु. श्रेयाा शिरढोणकर पुत्री श्री कोस्तुभ शिरढोणकर कक्षा 9 का चयन राष्ट्रीय स्तर शतरंज प्रतियोगिता के लिए किया गया है। जिसका आयोजन अक्टूबर माह में तेलंगाना राज्य में किया जायेगा। राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 7 से 10 सितम्बर 2015 तक खण्डवा में किया गया था जिसमें डॉल्फिन के तीन विद्यार्थियों ने भाग लिया था। जिनके नाम हैं – कु. श्रेया शिरढोणकर, कु. दीक्षा दाँगी व अंकुश नायक। जिसमें से कु. श्रेया शिरढोणकर ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुये राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की। कु. श्रेया की इस उपलब्धि में विद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी श्री विजय शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

विद्यालय परिवार ने छात्रा और उनके अभिभावकों को बधाई एवं शुभकामनायें दी हैं।

दिमाग दौड़ना चाहोगे

इस वर्गपहेली में आपको 1 से 9 तक के अंक भरना हैं और ध्यान रहे कि कोई भी अंक दो बार न आये। इस वर्ग पहेली में 'BODMAS' नियम लागू नहीं है।

	-		x		=	21
x		+		+		
	÷		x		=	18
+		x		x		
	x		-		=	31
=		=		=		
53		20		13		

वर्गपहेली का उत्तर

5	-	2	x	7	=	21
x		+		+		
9	÷	3	x	6	=	18
+		x		x		
8	x	4	-	1	=	31
=		=		=		
53		20		13		

– **आरती कुशवाह**
कक्षा 9 (अ)

1. जिन्दगी में कभी भी किसी को बेकार मत समझना। क्योंकि बन्द पड़ी घड़ी भी दिन में दो–बार सही समय बताती है।
2. किसी की बुराई तलाश करने वाले इंसान की मिसाल, उस मक्खी की तरह है, जो सारे खूबसूरत जिस्म को छोड़कर केवल जख्म पर ही बैठती है।
3. टूट जाता है गरीबी में वो रिश्ता जो खास होता है, हजारों यार बनते हैं, जब पैसा पास होता है।
4. मुस्कुरा कर देखो, तो सारा संसार रंगीन है, वरना भीगी पलकों से तो आईना भी धुँधला नजर आता है।

– सुदीप दाँगी, कक्षा – 10

नन्ही कूची

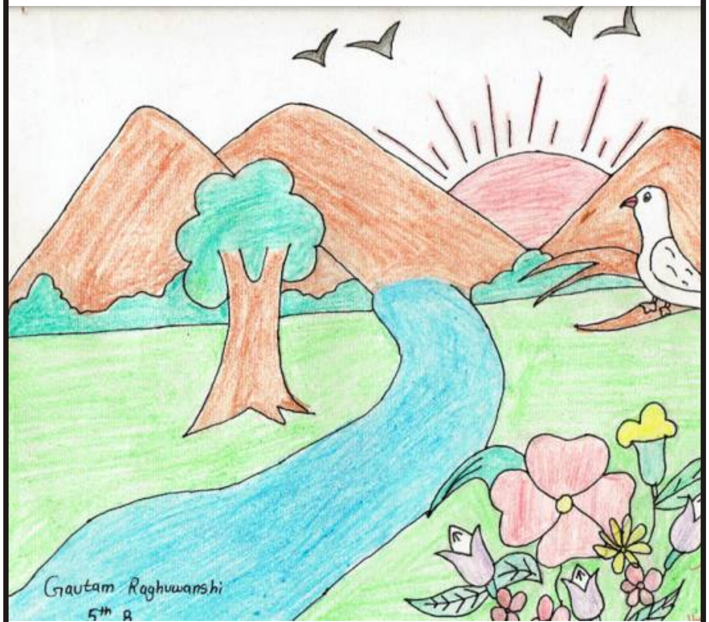

Pranjal Jain
IX (B)

Om Katare
5th (A)

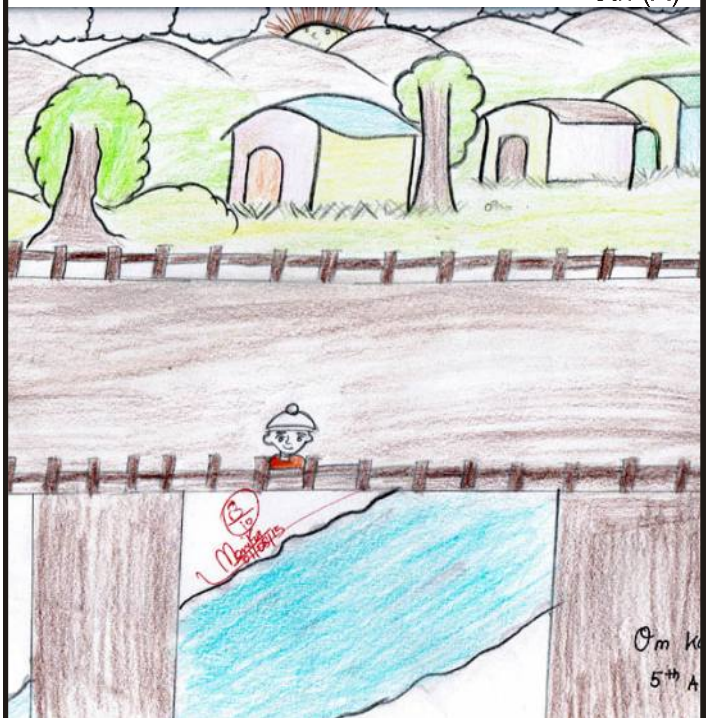

Aishwary Dongre
IX (B)